

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ५ मार्च, २०१७ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था
सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०१७

समय : सुबह ९.०० से १२.००

कुल गुणांक : १००

 अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है । परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुकसान मत किजिए ।	मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
		१ (६)	
		२ (५)	
		३ (४)	
		४ (४)	
		५ (८)	
		६ (८)	
		७ (७)	
		८ (५)	
विभाग-१, कुल गुण (४७)			

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन दिनांक महिना वर्ष

परीक्षार्थी का अभ्यास

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	९ (९)	
	१० (८)	
	११ (८)	
	१२ (५)	
	१३ (८)	
विभाग-२, कुल गुण (३८)		

पीछे दी गई सूचनाओं का अवश्य पालन करें ।

परीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षक की नोंद :-

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१४ (१५)	
विभाग-३, कुल गुण		

मोडरेशन विभाग भाटे ४

गुण आंकाओं में

शब्दों में

चेकटबुक नाम

परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं।
२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है। उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) में परीक्षा देनी होगी। इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी।
३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी। पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी। अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और ऐसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।
४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें। वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा।
५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें। पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी।
६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे। अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा।
७. परीक्षा खंड के बाहर अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी।
८. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापत्र' या 'सबस्टीट्यूट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी।
९. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा।
१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नपत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है। किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।
११. मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।
१२. परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है।
१३. प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें।
 - परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है। अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है। पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता है। प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है।
 - जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा। जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे।
 - प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा। एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा। ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे।
 - प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा।
 - नोंध : जिस परीक्षार्थी ने भारत की प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं।
१४. अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!

प्र. १ निम्नलिखित किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए।

(संदर्भ शास्त्र का नाम और क्रमांक लिखना अनिवार्य है।)

[६]

१. गुणातीत संत के लक्षण : वचनान्त के आधार पर

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

२. प्रकट की पहचान ही ज्ञान

३. भगवान में मनुष्यभाव देखने से हानियाँ

प्र. २ प्रमाण, सिद्धांत अथवा पंक्ति पर से विषय का शीर्षक दीजिए।

[५]

उदाहरण : “भगवान को निराकार समझने के रूप में किया गया पाप तो पंचमहापापों की अपेक्षा भी बहुत बड़ा पाप है।

इस पाप का कोई भी प्रायश्चित्त नहीं है।”

उत्तर : भगवान को निराकार समझने से हानि।

१. “जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।”

.....

२. “जिसमें भगवान सर्व प्रकार से निवास करते हों ऐसे जो संत हैं वे ही प्रत्यक्ष भगवान हैं।”

३. “भगवान के स्वरूप को समझने में यदि किसी प्रकार की कसर रह गई, तो किसी भी रीति से यह खामी नहीं हट पाएगी।”

४. “वांची कागळ कोई कथनो, जेम नार अपार राजी थई।”

५. “प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम नारायण की मूर्ति में शक्कर के रस की मूर्ति की तरह त्यागभाग नहीं समझना चाहिए।”

प्र. ३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें। [४]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं। सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा।

१. भगवान निराकार है इस विचार का उद्भव कैसे हुआ?

(१) ☐ श्रीमद्भागवत पुराण : २-१-९ (२) ☐ श्रीमद्भगवद्गीता : २-१-९

(३) ☐ वच. ग. म. ११ (४) ☐ वच. लोया १५

२. ‘भगवान सर्वोपरि हैं’ यह निष्ठा आवश्यक है।

(१) ☐ भगवान के साधु में मनुष्यभाव दिखाई देता है, इससे बढ़कर दुनिया में कोई बुरी बात नहीं है।

(२) ☐ श्रीजीमहाराज को पुरुषोत्तम जाने बिना अक्षरधाम में नहीं जा सकते।

(३) ☐ अन्य अवतार-सदृश जानेगा, तो उसका यह आचरण उस स्वरूप के विरुद्ध द्रोह कहलाएगा।

(४) ☐ उतना ही आत्मा-अनात्मा का विवेक रहता है।

[illegible]

[4]

- [illegible]

[୭]

१. अक्षरब्रह्म भी अक्षरधाम मे

 कर देते हैं।

- (उपासना में क्या नहीं समझना चाहिए?)

५. अकेले पुरुषोत्तम ही नहीं समझना चाहिए।
६. अकेले अक्षरब्रह्म ही हैं नहीं समझना चाहिए।
७. मक्तों की आत्मा नहीं समझना चाहिए।

This image shows a full page of white paper with horizontal dashed lines, typical of primary-ruled notebook paper. The lines are evenly spaced and run across the width of the page. There are no margins, text, or other markings on the paper.

[୧]

३. “इन्हें भोजन कराकर, बिना कुछ कहे, शांति से बिदा करना।”

२. महाराज ने धरमपुर का राज्य लेने से मना कर दिया।

()

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

३. आफ्रिकन अधिकारीओ को लगा कि वे इस पृथ्वी पर एक अलग प्रकार के महामानव को देख रहे हैं। **अथवा**

४. कूकड़ और ओदरका के बीच में उमंग छलक रहा था।

प्र. ११ निम्नलिखित विषय पर प्रमाणसर विवरण लिखिए। (बारह पंक्ति में)

[๔]

१. सारंगपुर के बाघा खाचर के दुःख का निवारण अथवा २. क्षमाशील रघुवीरजी महाराज

()

.....

३. निःस्वादी महापुरुष अथवा ४. अंधकार से उजालों के प्रदेश में प्रवेश करनेवाला मंगल

प्र. १२ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए।

[५]

१. कुशलकुंवरबा ने परमचैतन्यानंद स्वामी के साथ महाराज के लिए क्या क्या भेजा?

२. बड़ौदा की सभा में जाते समय मुक्तानंद स्वामी ने कौन-से कीर्तन का गान किया?
३. खुशाल भक्त को नभोई गाँव में श्रीजीमहाराज के कौन-से परमहंस का संबंध हुआ?
४. स्वामीश्री ने चमचमाती धूप में किस को अपने जूते निकाल दिए?
५. स्वामीश्री का ५१वां जन्मदिन कहाँ और कौन सी साल में आयोजित किया गया था?

प्र. १३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें। [८]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं। सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा।

१. पर्वतभाई

- (१) ☐ कारियाणी के थे। (२) ☐ पलंग के सत्संगी।
(३) ☐ महाराज की मूर्ति में चौबीसों अवतार प्रविष्ट होते हुए देखे। (४) ☐ दादाखाचर के नौकर थे।

२. शिवलाल सेठ ने कौन कौन से परमहंसों का समागम किया था?

- (१) ☐ गोपालानंद स्वामी (२) ☐ मुक्तानंद स्वामी
(३) ☐ गुणातीतानंद स्वामी (४) ☐ भायात्मानंद स्वामी

३. प्रमुखस्वामी का समर्पित भाव

- (१) ☐ इष्टदेव से अलग नहीं होते। (२) ☐ सेवक का दिया हुआ पानी स्वामीश्री ने पी लिया।
(३) ☐ हमेशा ठाकोरजी की मर्यादा रखनी चाहिए। (४) ☐ पानी लाओ और मैं झाडु लगाऊँगा।

४. प्रमुखस्वामी ने की हुई प्रार्थना।

- (१) ☐ बायपास सर्जरी के समय।
(२) ☐ लंदन में रात्रि के समय बरसात के लिए।
(३) ☐ मि. फ्रैन्क के जीवन को शांतिमय बनाने के लिए।
(४) ☐ १९८१ के आंदोलन के सुखमय निराकरण के लिए।

[१५]

- ()

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

* * *

<http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx>

પરીક્ષાર્થી શ્રી,
સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

**સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૭ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે
નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.**

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણે ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૭ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણે ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) જૂના ‘સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ’માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે : આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the list of essays will be asked in the Final Examination of March-2017.

સત્સંગ પ્રવીણ

નિબંધ-૧ :

દિવ્ય આનંદ-યોગના યોગી : યોગીજી મહારાજ

■ સાધુ ઈશ્વરચરણદાસ

‘આપ તો હવે યુગપુરુષ છો.’

‘ના, ભાઈ ના. હું તો દાસ છું.’

લીંબડીમાં એક વયોવૃદ્ધ દર્શનાર્થી સદાશંકરભાઈએ યોગીજી મહારાજને સન્માન્યા ત્યારે એમણે એકદમ સહજભાવે પ્રતિભાવ દર્શાવ્યો; જાણે કોઈનો અપરાધ ન થઈ જતો હોય! એવી દહેશત એ અભિવ્યક્તિમાં જણાતી હતી. આ હતી એમની આંતરિક પ્રતિભા! ઈષ્ટદેવ-ગુરુ પ્રત્યેનો દાસત્વભાવ!

૧૮૭૦માં વિદેશથી પાછા ફર્યા બાદ ગુજરાતની પ્રજાએ એમને ઠેર ઠેર સન્માન્યા ત્યારે એમણે એક જ પ્રતિભાવ આપ્યો....

બોટાદ સ્વાગતસભામાં તેઓ કહે: ‘તમે જે આદરભાવ આપ્યો તે સ્વામિનારાયણ ભગવાનનો છે. અમારો નથી, અમે દાસ-ભક્ત છીએ. વાસણ ઊટકનાર છીએ.’

તો સારંગપુરમાં સન્માન જોઈ એમણે સંતસ્વામીને પૂછ્યું: ‘તમે કેમ આ બધું કર્યું?’

‘તમે દૂર દેશથી આવ્યા તેથી કરવું પડે ને!’

‘અક્ષરધામથી આવ્યા છીએ! તે ક્યાં દૂર દેશ છે?’ યોગીજી મહારાજે સહજભાવે સ્પષ્ટતા કરી.

શ્રીજીમહારાજે વચનામૃત સારંગપુર પ્રકરણ ૧૦માં આ જ ભાવ વ્યક્ત કર્યો: ‘પોતાના જીવાત્માને ત્રણ શરીર થકી પૃથક્ માને અને તેને વિષે અખંડ ભગવાન વિરાજમાન છે એમ જે સમજે તો તે સંત થકી ભગવાન અથવા ભગવાનનું ધામ તે અણુમાત્ર છેટે નથી. અને એવા સંતનું દર્શન થયું ત્યારે એમ જાણવું જે મને સાક્ષાત્કાર ભગવાનનું દર્શન થયું.’

સદા આત્મદૃષ્ટિએ વર્તતા, પરમાત્મા સાથે અખંડ યોગ જેમનો સધાયો છે એવા યોગીજી મહારાજના વિભૂતિતત્ત્વનો સાર સમજવો મનુષ્યબુદ્ધિથી દુર્લભ હતો.

અવતરણના ઉષાકાળથી જ સાંસારિક પંચવિષયો-પદાર્થો -બંધનોથી ક્યાંય દૂર આ બાલયોગીનું મન પ્રભુ-ભક્તિમાં રમતું હતું. ઝીણાભાઈને બગસરા લગ્નપ્રસંગે લઈ ગયા તો મંદિરમાં ભજન કરવા માંડ્યા. ઘરઆંગણે માતા સારાં ભોજન-કપડાંનો આગ્રહ કરે તો કાંઈ ઈચ્છા જ નહીં. ભાણામાં જે પડ્યું તે ગળા નીચે ઉતારી દે; વધુ માગે નહીં. આવી ઉદાસીનતાથી જ જૂનાગઢી સદ્ગુરુ કૃષ્ણચરણદાસ સ્વામીએ એમનામાં સાધુતાનું હીર પારખી લીધું અને મમતાપૂર્વક ત્યાગાશ્રમ અપાવ્યો.

ઝીણા ભગતમાંથી સાધુ જ્ઞાનજીવનદાસ થયેલા આ યુવાન સંત જૂનાગઢમાં મંદિર તથા સંતોની અતિશય સેવા કરી, આકરાં વ્રત-ઉપવાસ આદરી સૌના લાડકવાયા ‘જોગી’ બન્યા.

પ્રીતે યજ્ઞપુરુષદાસ ગુરુને...

ગુણાતીત જ્ઞાન અને વ્રતમાં શૂરા અને પૂરા એવા ધુરંધર સદ્ગુરુઓ બાલમુકુંદ સ્વામી, નારાયણદાસ સ્વામી, માધવપ્રિયદાસ સ્વામી, કૃષ્ણચરણદાસ સ્વામી વગેરેનો સેવા-સમાગમ કર્યા પછી આ ઉત્કૃષ્ટ મુમુક્ષુ જાણે કોઈ ઉત્કૃષ્ટ ગુરુની શોધમાં હોય એમ પ્રથમ માધવપ્રિયદાસ સ્વામીની વાતોથી શાસ્ત્રી યજ્ઞપુરુષદાસમાં મનોમન આસક્ત થયા. રાજકોટમાં ભક્તરાજ કૃષ્ણજી અદાએ આ ભાવનાને ઘણું સમર્થન આપ્યું અને રાજકોટમાં જ અદાને ત્યાં શાસ્ત્રીજી મહારાજનું પ્રથમ મિલન યોજાયું.

અક્ષરરૂપ થઈ પુરુષોત્તમની શુદ્ધ ઉપાસનાના પ્રખર જ્યોતિર્ધરના પ્રથમ દર્શને આ બાળ-જોગીએ એમનાં ચરણોમાં પોતાનું મન સમર્પિત કરી દીધું. આ સ્નેહમિલનમાં પરમાત્માનો સંકેત જરૂર જણાય. કારણ, જૂનાગઢી સમર્થ સંતોનું પડખું છોડીને, મૂળ સંપ્રદાયથી જુદા પડેલા અપમાનિત અને હડધૂત થતા આ શાસ્ત્રીજી મહારાજને વરવા એમનું મન તત્પર થઈ ગયું. ગુણાતીત પરંપરાને ઉજ્જવળ રાખવા જ આ બાળજોગી જાણે અવતર્યા હોય તેમ જણાતું હતું.

જૂનાગઢ મંદિરના નાના એવા બાળસખા નારણ ભગતની મહોબ્બત છોડી ન શકે, એ સંતે જૂનાગઢી મહાન સદ્ગુરુઓની મહોબ્બત છોડી, શાસ્ત્રીજી મહારાજનો સથવારો લીધો, ત્યારે જરૂર જણાય કે આ જોગી પણ શુદ્ધ ઉપાસનાના પ્રવર્તનના જ્યોતિર્ધર થવા અવતર્યા હતા. હજુ તો શાસ્ત્રીજી મહારાજનો નજીકથી સત્સંગ પણ નથી થયો એટલામાં આ એમનો આખરી નિર્ણય પૂર્વના સંકેત વગર અસંભવિત લાગે. આમ, યજ્ઞપુરુષ અને જ્ઞાનજીવનની જોડી સંધાઈ ગઈ અને અક્ષરપુરુષોત્તમના ‘જ્ઞાનયજ્ઞ’નો આરંભ થયો, એ એક વિરલ છતાં શ્રીજીપ્રેરિત ઐતિહાસિક ઘટના હતી.

શ્યામ તન, શ્યામ મન, શ્યામ હૈ હમારો ધન...

આ પંક્તિ અનુસાર ગુરુ શાસ્ત્રીજી મહારાજ એમનું જીવન હતા, એમનું સર્વસ્વ હતા. તેઓ કહેતા: ‘અમે સંવત ૧૯૬૭માં શાસ્ત્રીજી મહારાજ પાસે આવ્યા. સંવત ૨૦૦૭માં સ્વામી ધામમાં ગયા ત્યાં સુધી સ્વામીની એકધારી આજ્ઞા પાળી રાજી કર્યા... શાસ્ત્રીજી મહારાજના જ મનનું ધાર્યું કર્યું છે, પણ આપણા મનનું ધાર્યું કર્યું નથી. તે સ્વામી અતિશય રાજી થયા છે ને અત્યારે દર્શન દે છે ને સુખ આપે છે... અમને શાસ્ત્રીજી મહારાજ ‘જોગી’ કહીને બોલાવે તે એકદમ કાંટો ચઢી જાય કે મને શાસ્ત્રીજી મહારાજે બોલાવ્યો!’

ઉનાળાનો સખત તાપ કે વરસાદની હેલીઓ, શિયાળાની કડકડતી ઠંડી — એવી કોઈ અગવડો જોયા વગર ઉપવાસથી તન શોષીને, અખંડ ભજનથી મનને પોષીને, ગુરુઆજ્ઞાથી ગામડાંના ધૂળિયા રસ્તા ઉઘાડે પગે ખેડીને, ગામોગામ ભિક્ષાની આહ્લેક લગાવતાં, અક્ષરપુરુષોત્તમની ઝોળીઓ માગવામાં એમને અનેરો આનંદ આવતો.

અક્ષરપુરુષોત્તમ જ્ઞાનના નવા ભાગીદારો એવા ભક્તોને, રાખરખાવટથી - સેવા કરી બહુ સાચવતા. નાહવા માટે ગરમ પાણી આપવાથી માંડીને હરિભક્તોને ઊની ઊની રોટલીઓ જમાડવામાં એમણે શ્રીજીમહારાજની સેવા માનેલી. આથી શાસ્ત્રીજી મહારાજને હરિભક્તોની સહેજ પણ ચિંતા કરવી પડતી નહીં. તેઓ સૌને જ્ઞાનામૃતથી સુખિયા કરતા. એમની ગેરહાજરીમાં યોગીજી મહારાજ પણ ભક્તોને સ્વામીની વાતો તથા કીર્તનો બોલીને કથાવાર્તાનું પોષણ પણ આપતા.

શાસ્ત્રીજી મહારાજના અંતર્ધાન પછી એમની આજ્ઞા પ્રમાણે ગઢપુર મંદિરનું કાર્ય પૂરું કર્યું. સંસ્થાના પ્રમુખ શાસ્ત્રી નારાયણસ્વરૂપદાસજીને સાથે રાખીને સંપ્રદાયની અનેક ગણી વૃદ્ધિ કરી. તેઓ કહેતા: ‘મને તો એક રોટલો ખાવા મળે તો તે ખાઈને સૂઈ રહું, પણ શાસ્ત્રીજી મહારાજની સંસ્થા વધે તે માટે દાખડો કરું.’

શાસ્ત્રીજી મહારાજના શતાબ્દી મહોત્સવની ઉજવણી માટે હરિભક્તોને સેવામાં પ્રેરવા ૭૪ વર્ષની અવસ્થા અને રોગોનું ઘર એવા શરીરથી સખત ઠંડીમાં જૂજ દિવસમાં ૮૦ ગામડાં ફર્યા. તેઓ કહેતા: ‘શાસ્ત્રીજી મહારાજની જયંતી ઊજવવાની હોય તો હું માથું આપી દઉં, મારી જયંતી ઊજવે તે મને ગમે નહીં. હું તો વાસણ ઊટકવામાં તૈયાર, ટોકણી ખમવામાં તૈયાર, મારે તો પહેલેથી સેવકધર્મ, ગુરુધર્મ નહીં. ગુરુ થવું ગમે જ નહીં, સેવક થવું ગમે.’

તા. ૭-૭-૭૦ના લંડનથી ભારત પાછા ફરતાં વિમાનમાં સંતોએ તથા નારણ ભગતે યોગીજી મહારાજને જળપાન કરવા બહુ આગ્રહ કર્યો, પણ ‘હમણાં પીશું, પછી પીશું’ એમ કહી તેઓ ઠેલતા રહ્યા. પછી અતિશય આગ્રહ કર્યો ત્યારે

કમને એક-બે ઘૂંટડા જળપાન કર્યું. નારણ ભગતે કારણ જાણવા બહુ કાલાવાલા કર્યા, ત્યારે કહે : ‘ચાલીસ વર્ષ પહેલાં શાસ્ત્રીજી મહારાજે અમને નિયમ આપ્યો હતો કે મોટરમાં કે ગાડીમાં કંઈ ખાવું નહીં, પીવું નહીં.’

સૌ સ્તબ્ધ થઈ ગયા. આ નાની એવી ગુરુઆજ્ઞાનું એમણે જીવનભર યથાર્થ પાલન કર્યું તો પછી બીજી આજ્ઞાઓને કેટલા વળગી રહ્યા હશે તે સહેજે સમજી શકાય.

નીચી ટેલ મળે તો માને ભાગ્ય જો...

શ્રીજીમહારાજે વચનામૃતમાં નિરૂપેલો સેવાનો આદર્શ એમણે રગેરગમાં વણી લીધો હતો. જો કે ગુણાતીત સંત-પરંપરામાં સેવાનો મહિમા સારધાર જોવા મળે છે. સાક્ષાત્ પરમાત્મા શ્રીજીએ છાણાં થાપ્યાં તો ગુણાતીતે વાસીદું વાળી મહંતાઈ દીપાવી. ભગતજીએ ચૂનો કાલવ્યો તો શાસ્ત્રીજી મહારાજે મંદિરોના પાયા ગાળ્યા.

સેવાના વ્યસની આ મહાપુરુષે કછોટો મારી આરંભેલી સેવાની દોટ છેવટના શ્વાસ સુધી વણથંભી રહી. ભંડારનું કામ હોય કે પીરસવાનું, ઝોળી માગવાનું કે મંદિરના શ્રમનું, વાસણ ઊટકવાનું હોય કે ચોકો સાફ કરવાનું, ઠાકોરજીની સેવા, પૂજા, આરતી હોય કે એમને થાળ ધરાવવાનું, બધાં જ કામની એમને ફાવટ. મહારાજ અને સ્વામીને રાજી કરવા સાત સમેલિયા બની દેહને વાટી નાખવાની એમને ખેવના હતી. એટલે તો અન્નકૂટની બધી વાનગીઓ બનાવવાનું જૂનાગઢમાં સાધુ હરિસ્વરૂપદાસજી પાસે નાની વયે શીખ્યા અને સ્વામી કૃષ્ણચરણદાસજીને રાજી કરવા વાસણોને કલાઈ કરવાનું શીખવાનું પણ એમણે બાકી રાખ્યું નહીં.

યોગીજી મહારાજ અને વૃદ્ધ સંત ધર્મસ્વરૂપદાસ ગોંડલમાં એઠાં વાસણ ઓરડીમાં સંતાડી દેતા અને બપોરે કોઈ ન જુએ એમ વાસણ ઊટકવાની સ્પર્ધા કરતા. કોઈ પૂછે તો કહેતા કે દેવતાઓ આવીને વાસણ ઊટકી ગયા.

અમદાવાદમાં ભરબપોરે છાનામાના રસોડામાં પેસી પુરાઈ જઈ, વાસણ ઊટકવા લાગ્યા, ત્યારે કોઠારી બબુભાઈની જાણમાં આવતાં વાસણ ઊટકતા માંડ અળસાવ્યા.

પોણા-સો વર્ષે પણ મુંબઈમાં એક બપોરે માંદગીના બિછાને એકાએક જાગ્રત થઈ સેવકને કહે: ‘મને વાસણ ઊટકવા જવા દો ને!’ એમણે મીઠી રીસ કરી માંડ સુવાડ્યા તો થોડી વારે વળી આજીજી કરવા લાગ્યા: ‘મને વાસણ ઊટકવા દો ને!’

આ હતી એમની સેવાની લગન, જે શરીર કામ કરતું બંધ થયું છતાં સેવા વગર રહી શકતું નહીં. માંદગીમાં પણ સેવા કરવાના અહર્નિશ સંકલ્પ કરતું.

સેવામાં પણ ભજનનો દોર, અર્થાત્ ભજન કરતાં કરતાં સેવા કરવાની ટેવ. એટલે નવરા પડે તો કથા-કીર્તન ચાલુ. મુખપાઠ કરેલી સ્વામીની વાતો, વચનામૃત અને કીર્તનોનો અખૂટ ભંડાર એમની પાસે હતો. એટલે પોતે જ કહેતા કે ‘ધાણી ફૂટે એમ વાતું, વચનામૃત, કીર્તનો હું બોલતો.’

સવારના બ્રાહ્મમુહૂર્તથી જ ભજનની કડકડાટી બોલાવતા, મુક્તાનંદ સ્વામીના સિંધુડા જ્યારે એમના મુખકમળમાંથી નીકળતા ત્યારે ખરેખર તે પદો ધન્ય બની જતાં હશે. કારણ, એવી પ્રેમ અને શૂરવીરતાની પોતે મૂર્તિ હતા. સેવા સાથે ભજન-ભક્તિનું અનુસંધાન અને કથાવાર્તાનો પણ એટલો જ આગ્રહ ઈષ્ટદેવમાં અપૂર્વ આસક્તિ વગર શે સંભવે?

અમૃત મહોત્સવમાં લાખોની મેદની વચ્ચે ઊંચા કમલાસને બિરાજ્યા પછી બીજી ક્ષણે જ્યારે સભામાંથી મંદિરે આવ્યા ત્યારે સૌ સેવકોની સાથે તાંદળજાની ભાજી તોડવા બેસી ગયા. તે જોઈ જતાં કાગબાપુનું કાળજું એમની સાધુતાથી વીંધાઈ ગયેલું અને બોલી ઊઠ્યા હતા: ‘આ બાપો, હમણાં હજારોનાં હૃદયાસને બેઠેલો, અત્યારે નીચે બેઠો બેઠો ભાજી તોડે છે!’ એમનું મસ્તક નમી પડ્યું.

ગુરુ મનાવવાનો લેશ ભાવ નહીં...

યોગીજી મહારાજનાં પ્રથમ દર્શને અલ્પ પરિચયમાં આવનાર મહાનુભાવોના એકાએક નીકળેલા ઉદ્ગારો પણ થોડામાં ઘણું કહી જાય છે. વિદ્વાન વૈષ્ણવ ભક્ત પ્રાધ્યાપક બાંભણિયા કહેતા: ‘યોગી જેવા સાધુ અનંત કોટિ બ્રહ્માંડમાં એકેય નથી – આ શાસ્ત્રીજી મહારાજના શબ્દો કાનમાં ગુંજે છે. મારો પણ એ જ સ્વાનુભવ છે. નિર્મળતા, મૂર્તિમાં સાક્ષાત્ ભગવાનનો ભાવ, સૌની રક્ષાર્થે માળા ફેરવવી, દોડી-દોડીને સૌની સેવા કરવી, આવા અનેક ગુણો એમનામાં

દેખાય છે.’

રાજકોટના વિદ્વાન લેખક મણિભાઈ પારેખ, સાધુતાના પ્રશંસક છતાં વિચક્ષણ ભાવે જોનારા તેઓ યોગીજી મહારાજ માટે બોલતા: ‘જીવનની શુદ્ધિ, ભક્તિ, દીનતા અને સાદાઈ એમનામાં પૂરેપૂરાં ખીલી ઊઠ્યાં છે. એમની સાદાઈ બેનમૂન છે. જ્ઞાન, વિદ્વત્તા કે કર્મશીલતાનો ભાર હોય ત્યારે સાદાઈ દુર્લભ બને છે. હૃદયમાં સાચી ભક્તિથી સાદાઈ આવે છે. યોગીજી મહારાજ હજારોના ગુરુ છે, છતાં એનો ભાર શિરે નથી. બીજા ગમે તેટલા મહાન હોય પણ ગુરુ મનાવવાનો ભાર આવી જાય છે, જે સૌથી વધારે અભિમાન લાવે છે. જ્યારે યોગીજી મહારાજમાં દીનતા અને સાદાઈ દિન-પ્રતિદિન વૃદ્ધિ પામતાં જણાય છે.’

જ્યારે જાણીતા સાહિત્યકાર ઝીણાભાઈ દેસાઈ - સ્નેહરશ્મિ કહે છે: ‘એમનાં પ્રથમ દર્શને જ અહોભાવથી મન સભર બની ગયું. પ્રેમ પ્લાવિત માનવતાની પરમ ભાગીરથીમાં લીન થઈ જવાની ધન્યતા મેં અનુભવી. મને માત્ર યાદ રહ્યું છે એમના વાતસલ્યથી મધમધતું એમની ચોમેરનું હુંફાળું વાતાવરણ.’

એવા જ બીજા વિદ્વાન ડોલરરાય માંકડે પોતાનો અનુભવ કહ્યો: ‘એમના સાંનિધ્યમાં ગૂઢ અનુભૂતિ થાય છે; મન શાંત બને છે.’

તો રમણલાલ સોનીએ નિહાળ્યું: ‘એમનાં અંગેઅંગમાંથી સર્વત્ર પ્રસરતું આનંદરૂપ ચૈતન્ય થોડી થોડી વારે એકદમ રાજી થઈ તાળી પાડી ઊઠે છે.’

યોગીજી મહારાજના સ્મરણમાત્રથી જ અંતરીક્ષમાં ગુંજી રહેલા કેટકેટલાય પવિત્ર પુરુષોના પ્રશસ્તિ શબ્દો કર્ણપટ ઉપર લહેરાતા, આ દિવ્ય વિભૂતિ વિષે હૃદયસ્પર્શી વાતો કરી જાય છે. પ્રથમ પરિચયમાં જ અનેક મહાત્માઓ તથા સજ્જનોએ અનુભૂતિનાં જે શબ્દપુષ્પો વેર્યાં છે તેથી શાશ્વત માધુર્યનો રોમાંચ અનુભવાય છે. જો કે સંતના સ્વશબ્દો જ સ્વસ્વરૂપને વધારે સ્ફુટ કરે છે છતાં સંતને સંત જ ઓળખી શકે એ સુપ્રસિદ્ધ ન્યાયે પણ એવા કેટલાક વિશિષ્ટ સંતજનોના અમૂલ્ય ઉદ્ગારો યોગીજી મહારાજનું યત્કિંચિત્ દર્શન કરાવે છે.

‘યોગીજી મહારાજના સાંનિધ્યમાં મેં જે અનુભવ્યું તે હું શબ્દોમાં રજૂ કરી શકતો નથી. ઉપનિષદોમાં જે અનુભૂતિ છે તેનું મૂર્તિમાન સ્વરૂપ હતા. એ વૃદ્ધ કાયામાંથી આપોઆપ ફૂટી નીકળતો સર્વાત્મા બ્રહ્મનો સર્વોચ્ચ આનંદ, જાણે વિશુદ્ધ પ્રેમની સુગંધીમાન લહેરરૂપે ધસમસતો, એમની નજીક આવનારમાં પ્રવેશતો અને હૃદયને ભરી દેતો. પછી ભલેને તે જીરવવા સુપાત્ર ન હોય. એથી જ કોઈપણ એમને તથા એમના સાંનિધ્યને છોડી શકતા નહીં. એવા આધ્યાત્મિક ગુરુને આપણે માત્ર પ્રણિપાત કરી શકીએ છીએ.’

કેવું સુભગ દર્શન! ઉપનિષદો જેને ‘નેતિ નેતિ’ કહે છે, તે અક્ષરબ્રહ્મનું સમ્યક્ દર્શન એટલે યોગીજી મહારાજ ! જેમનો સહવાસ સાંપડ્યા પછી કોઈ એમને છોડી શકતું નહીં. વેદાંતના પ્રખર પ્રચારક, આધુનિક આંતરરાષ્ટ્રીય વિદ્વાન, ચિન્મય મિશનના સ્થાપક સ્વામી ચિન્મયાનંદજીના આ ઉદ્ગારો આપણને ટૂંકમાં ઘણું કહી જાય છે.

ભાગવત કથાકાર ડોંગરેજી મહારાજને મળતાં યોગીજી મહારાજે તેમને વિનંતી કરી હતી કે ‘મારે એક વખત સમય લઈને આપના મુખે ભાગવત સાંભળવું છે.’ ત્યારે યોગીજી મહારાજને પ્રણામ કરતાં તેઓ વિનયપૂર્વક એટલું જ બોલ્યા કે ‘આપ ભાગવતને મારે ભાગવત શું સંભળાવવું?’ યોગીજી મહારાજને મૂર્તિમાન ભાગવત સ્વરૂપ જોતાં તેઓ વધુ બોલી શક્યા નહીં.

ભાગવતના એવા જ વિદ્વાન વક્તા કૃષ્ણશંકર શાસ્ત્રીજી અવારનવાર યોગીજી મહારાજનાં દર્શને દોડી આવતા. યોગીજી મહારાજ પ્રત્યે તેઓ અપાર સ્નેહ ધરાવતા અને અનેક વાર કહેતા: ‘નિર્માનીપણું એ તો એમની પ્રભુપ્રદત્ત પ્રકૃતિ છે. સર્વસુલભપણું તો એમના સ્વભાવમાં વસેલું છે. બાળક કે બુદ્ધિમાન બંને એમની પાસે આવે ત્યારે કાંઈક મેળવીને જાય.’

‘આ સંતવર્યની એક વિશેષતા છે. એમની પાસે કોઈ ભેટ મૂકીને જતા નથી, પરંતુ કાંઈક લઈને જાય છે. જે સમીપમાં આવે તે શ્રદ્ધા લઈને જ જશે. સમાધાન, સંતોષ, સત્કર્મનો નિયમ, સત્સંગનો નિયમ, શુભાશીર્વાદ આવી અમૂલ્ય ભેટો વિના આપાસે મળે છે.’

‘જ્યારે એમનાથી સત્સંગીજન વિખૂટો પડે છે ત્યારે તે ભગવાનને ભેટીને જતો હોય એવો અનુભવ કરે છે.’

આ દુનિયામાં માનવીને જો મનાય તો ભગવાનની ભેટથી બીજી કોઈ મોટી ભેટ નથી. એવું અમૂલ્ય ભગવદ્દાન યોગીજી મહારાજ અખંડ કરતા રહેતા એ શાસ્ત્રીજીનો સ્વાનુભવ હતો.

હું ટળે હરિ ટૂંકડા, તે ટળાય દાસે રે...

૧૯૭૦માં વિદેશની અભૂતપૂર્વ ધર્મયાત્રા પછી મુંબઈમાં બોટાદના ભગા દોશીનો પરિવાર સ્વામીશ્રી પાસે ખુશાલી વ્યક્ત કરતો બોલી ગયો : ‘બાપા! આપે તો ડંકો માર્યો. મહારાજના વખતમાં પણ આપણો સત્સંગ ગુજરાતથી બહાર નથી ગયો ને આપે લંડન સુધી ફેલાવ્યો!’

ઉકાળો પીતાં સ્વામીશ્રીની રકાબી હોઠે રહી ગઈ ને એકદમ બોલી ઊઠ્યા : ‘શું બોલો છો? એવું ન બોલાય! શ્રીજીમહારાજની દૃષ્ટિથી આ બધો સત્સંગ વધે છે. આપણે કોણ? ગાડા નીચે કૂતરું ચાલ્યું જાય ને પછી જાણે ‘હું ગાડું હંકારું છું.’ એમ ન થાય. મહારાજની દૃષ્ટિથી ડંકો વાગ્યો છે!’

પ્રેમ ભક્તિ જેને ઘટ આવે, તેહને રંગ હરિ રાયે રે...

નારદ અને શાંડિલ્ય ભક્તિસૂત્રોના સિદ્ધાંતોને પણ ટપી જાય એવી ભક્તિ-રીતિ યોગીજી મહારાજે આત્મસાત્ કરી હતી. વરતાલમાં હરિકૃષ્ણ મહારાજ સાથે તથા ગોંડલમાં ઘનશ્યામ મહારાજ સાથે તેઓ પ્રત્યક્ષ વાતો કરતા. કોઈ પૂછે તો કહેતા: ‘મહારાજ સાથે અમારો ટેલિફોન ચાલે છે. બોલનારને સંભળાય, તમને ન સંભળાય. નહીં તો આપણું ગાડું ચાલે નહીં.’

મહારાજને હરદમ સાથે રાખી રોકેટની ગતિએ સત્સંગ-પ્રવૃત્તિ કરતા યોગીજી મહારાજ હંમેશાં ગાડામાં બેસવા ટેવાયેલા હોવાથી ગાડું હલાવવાની જ વાત આગળ ધરતા. નામ-રટણ તથા ભજન-સ્મરણના દોરથી મહારાજ સાથે સતત સંધાયેલા યોગીજી મહારાજ શ્રીજીમહારાજની પ્રત્યક્ષ નવધા ભક્તિ સહિત પરા ભક્તિનું સુખ-સાતત્ય માણી રહ્યા હતા.

ભક્તોના આગ્રહથી ભાવનગરમાં ઠાકોરજી સમક્ષ યોગીજી મહારાજ ભાવથી વિવિધ થાળ બોલ્યા અને સૌના આશ્ચર્ય વચ્ચે વાનગીઓ ઓછી થઈ ત્યારે સૌને પ્રતીતિ આવી કે જોગી થાળ ધરે છે ને મહારાજ સાક્ષાત્ જમે છે. આમ તો હરિકૃષ્ણ મહારાજ હંમેશાં એમના થાળ જમતા. કારણ, એવો તો ભાવથી થાળ બનાવે, મહારાજ પ્રત્યક્ષ જમતા હોય એમ વિવિધ થાળ ભાવથી બોલી એમ મનુવાર કરે, મહારાજ સામે બેઠા હોય તેમ વધુ જમવા વારંવાર આગ્રહ કરે, ગળા ઉપર હાથ મૂકી વધુ લેવા સમ દે. વળી, મહારાજને પૂછતા જાય: ‘ખારું ને મોળું રે હરિવર કહેજો જી, મીઠું, મરી, ચટણી રે માગી લેજો જી...’ એ દર્શનનો લહાવો જેણે લીધો હોય તેને એમ જરૂર મનાય કે તેઓ મહારાજને સામે બેસાડીને પ્રેમપૂર્વક પ્રત્યક્ષ જમાડી રહ્યા છે. કારણ, પોતે મહારાજને સાકાર - મૂર્તિમાન સમજી ભક્તિ-ઉપાસના કરતા.

ભાગવતમાં ઉદ્ભવજી જે ભક્તનો મહિમા વર્ણવે છે: ‘આસામહો ચરણ-રેણુજુષામહં સ્યામ્...’ અને ભક્તની ચરણરેણુના સ્પર્શની અભિલાષા સેવે છે, એથી પણ વિશેષ ભાવનાનું પ્રત્યક્ષ દર્શન પણ યોગીબાપામાં અનેક પ્રસંગે થતું.

સન ૧૯૫૬માં યાત્રા-ટ્રેનમાં પોંડિચેરી સ્ટેશન ઉપર ટ્રેન ચાર્ડમાં પડી હતી. સૌ ભક્તો શહેરમાં આશ્રમ જોવા ગયા હતા, ત્યારે વિનુભાઈ અને જશભાઈ બંને યુવાન સેવકોનો હાથ પકડી એમણે ૧૪ ડબ્બાની મોટી ટ્રેનની પ્રદક્ષિણા કરી હતી. પછી ટ્રેનને દંડવત્ કરવા લાગ્યા ત્યારે જશભાઈએ દલીલ સુધ્યાં કરી કે ટ્રેનમાં કોઈ છે તો નહીં ને દંડવત્ કોને કરો છો? ત્યારે તેઓ બોલ્યા: ‘ભલે ભક્તો નથી, પણ તેમનો સામાન તો છે ને!’

ભક્તોના સામાનનો આ મહિમા! તો ભક્તોની ચરણરજનો એમને કેટલો મહિમા હશે તે ત્રિરાશિ મૂકવાથી પણ સમજાય એવું નથી. કારણ, બીજા એક સમયે બંધિયામાં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા પ્રસંગે સેવા કરતા યુવકો, જે રાત્રે મંદિરના ફળિયામાં મોદ ઉપર સૂતા હતા, તેમને અર્ધરાત્રિએ જાગીને, કોઈ ન જુએ એમ તેઓ દંડવત્ કરતા હતા. વિનુભાઈ જાગી ગયા ને પૂછ્યું તો કહે: ‘આ બધા યુવકો ઘર છોડીને અહીં આવી સેવા કરે, તેમનો મહિમા સમજવો જોઈએ ને!’

વચનામૃત ગઢડા મધ્ય પ્રકરણ ૨૮માં ઉચ્ચારેલા શ્રીજીમહારાજના શબ્દો: ‘હું તો ભગવાનના ભક્તનો પણ ભક્ત છું અને હું ભગવાનના ભક્તની ભક્તિ કરું છું, એ જ મારે વિષે મોટો ગુણ છે.’ તે ભાવના અહીં એમનામાં મૂર્તિમાન જોવા મળતી.

‘અમે જળકમળવત્ રહીએ છીએ’

સન ૧૯૭૦માં ઈંગ્લેન્ડની ભૂમિ પર અંગ્રેજ ખબરપત્રીઓ સાથેનો યોગીજી મહારાજનો વાર્તાલાપ મનનીય હતો. આ ભૂમિ ઉપરના આગમનનું કારણ પૂછતાં, એમણે ઘણા ખબરપત્રીઓને જણાવેલું કે ‘ભગવાન સ્વામિનારાયણ જહોન માલ્કમની રક્ષા કરવા દિવ્ય દેહે અહીં પધારેલા. એ પ્રાસાદિક ભૂમિનાં દર્શન કરવા, અમારા હરિભક્તોને મળવા, સત્સંગ કરાવવા, સૌને વ્યસનમુક્ત કરવા... અમે આવ્યા છીએ.’

ડેવિડ બ્લોન્ડી: ‘આપને કોઈ આધિ, વ્યાધિ કે ઉપાધિ આવી છે ખરી?’

યોગીજી મહારાજ: ‘જિંદગીમાંય આવી નથી.’

ડેવિડ મર્ટન્સ: ‘આ જગતમાં આપ કેવી રીતે રહો છો?’

યોગીજી મહારાજ: ‘શ્રીજીમહારાજે કહ્યું છે - આ જગત નાશવંત, તુચ્છ છે. તેમ માનીને આ જગતમાં જળકમળવત્ રહીએ છીએ.’

ડેવિડ મર્ટન્સ: ‘આપ ભગવાન સાથે વાતો કરો છો તે બીજા કેમ જાણે?’

યોગીજી મહારાજ: ‘એ ભાવને પામ્યો હોય તે જાણે.’

આવી અનેકવિધ સંતપ્રતિભા-સંપન્ન યોગીજી મહારાજને અનેક વાર નજીકથી જોયા પછી પણ કળવા મુશ્કેલ હતા. ઘણાં વર્ષો પહેલાં મુંબઈથી પ્રગટ થતા અંગ્રેજી સામયિક ‘Bhavan's Journal’માં ‘How God came into my Life’ નામની લેખમાળામાં પ્રસિદ્ધ સંતોએ પોતાના અનુભવ વર્ણવેલા હતા. એ જોઈ અમે જિજ્ઞાસાપૂર્વક યોગીજી મહારાજને વિનંતી કરી કે ‘આપનો અનુભવ જણાવો તો અમે તેમને લખી મોકલીએ.’ ત્યારે તેઓ મર્માળું હસીને બોલ્યા: ‘અમારે તો અખંડ ભગવાનનું દર્શન છે!’ એ પળે એમનું દર્શન અલૌકિક હતું.

આવી જ એક અદ્ભુત ઘટના અમદાવાદમાં બની ગઈ. દિવસ-રાત જોયા વગર વૃદ્ધાવસ્થાને અવગણતા યોગીજી મહારાજ જે વિચરણ કરતા હતા તે જોઈ સત્સંગના પીઠ, વિચક્ષણ સત્સંગી અને સરકારી વકીલ હરિપ્રસાદ ચોક્સીએ એમને એકાએક પૂછ્યું: ‘આપ આ ઉંમરે બહુ ભીડો કેવી રીતે વેઠો છો, તે મને સમજાતું નથી. આપ સ્વામિનારાયણ પોતે છો કે શું છો તે મને સમજાવો!’ યોગીજી મહારાજના બે હાથ પોતાના હાથમાં લઈ તેઓ ગદ્ગદિત થઈ પૂછી રહ્યા હતા.

‘એવું કાંઈ નથી. અમે તો દાસના દાસ છીએ.’ શ્રીજીમહારાજનો જાણે અપરાધ થઈ જતો હોય તેમ દાસભાવે તેઓ બોલ્યા. ચોક્સી સાહેબે એમના બે હાથ દબાવ્યા ને વધારે વિહ્વળ બની ઉત્તર માગ્યો. એમના આર્દ્ર ભાવથી માત થઈ છેવટે યોગીજી મહારાજ એટલું બોલ્યા: ‘સ્વામિનારાયણ ભગવાને આપેલી શક્તિ કામ કરે છે.’

ભગવાન સ્વામિનારાયણે વચનામૃત ગઢડા અંત્ય પ્રકરણ રહમાં આધ્યાત્મિક રીતે ભગવાનના સંતનાં લક્ષણો સમજાવતાં કહ્યું: ‘એવા સંત મનુષ્ય છે તોપણ ભગવાનની પેઠે સેવા કરવા યોગ્ય છે.’

બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે અનેક વાર એમને માટે કહ્યું: ‘યોગી જેવા સાધુ અનંતકોટિ બ્રહ્માંડમાં નથી...’

આવા અનેક પ્રેમોદ્ગારોથી એમણે પોતાના લાડીલા સેવક ‘યોગી’ને નવાજેલા, જે એમની ઓળખ માટે યથાર્થ છે.

તે યોગીજી મહારાજે ‘પ્રમુખસ્વામી મહારાજ મારું સર્વસ્વ છે’ કહીને જેમનો યોગ આપણને કરાવ્યો છે, એમના સ્વરૂપમાં આપણો યોગ અખંડ થાય, તો સહેજે યોગીજી મહારાજના સાંનિધ્યનો આજેય અનુભવ માણી શકીએ, એ નિતાંત સત્ય છે. ♦

નિબંધ-૨ :

દિવ્ય, પારલૌકિક અને ઐતિહાસિક અંતિમ પળો...

તા. ૧૩ ઓગસ્ટ, ૨૦૧૬.

શ્રાવણ સુદ ૧૦, વિ. સંવત ૨૦૭૨.

તીર્થધામ સારંગપુર.

ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની આ પ્રાસાદિક ભૂમિ પર પોતાના પાવન પ્રિય તીર્થધામમાં વિશ્વવંદનીય સંતવિભૂતિ પ્રમુખસ્વામી મહારાજ છેલ્લા ૧૨૦૦ દિવસથી વિશ્રામ લઈ રહ્યા હતા.

આજનું પ્રભાત થયું ત્યારે કોઈને કલ્પના નહોતી કે આજનો દિવસ ઇતિહાસનું કંઈક અનોખું પૃષ્ઠ લખવા સર્જ્યો છે.

અપરાહ્નના બરાબર ૪-૦૦ વાગ્યાનો સમય હતો. વિશ્વવંદનીય સંતવિભૂતિ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ સારંગપુર તીર્થધામમાં વિશાળ બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ મંદિરના પરિસરમાં તેઓના નિવાસ- આશ્રમ ‘સર્વસ્વ’માં પોઢી રહ્યા હતા. સેવક સંતો સામાન્ય ક્રમ મુજબ સ્વામીશ્રીને જમણી તરફ પડખું ફેરવવા માટે ચર્ચા કરી રહ્યા હતા, એ જ વખતે સતત ચાલી રહેલા મોનિટરીંગમાં સેવારત ડોક્ટરોએ નોંધ્યું કે અચાનક જ સ્વામીશ્રીના બ્લડપ્રેશરમાં એકદમ ઘટાડો આવ્યો છે. તાત્કાલિક અનિવાર્ય પગલાંઓ દ્વારા ડોક્ટરોએ સારવાર આપવા માંડી. નિષ્ણાત તબીબો દ્વારા આધુનિકતમ સારવાર અપાતી હોવા છતાં બ્લડપ્રેશર અને નાડીના ધબકારા નિયંત્રિત થતા નહોતા. સ્વામીશ્રી આ સમય દરમિયાન ખુલ્લી આંખે ખૂબ શાંત અને સ્વસ્થ ચિત્તે બધું નિહાળી રહ્યા હતા. તેમના તરફથી કોઈ ફરિયાદ કે કોઈ ઉલ્કારો સુદ્ધાં નહોતાં. એક તબક્કે તેઓના મુખમાંથી માત્ર એક જ શબ્દ સંભળાયો: ‘જય સ્વામિનારાયણ.’ એ સમયે સ્વામીશ્રીના પ્રાણપ્રિય હરિકૃષ્ણ મહારાજને તાત્કાલિક તેમની નજર સમક્ષ ધરવામાં આવ્યા. શ્રીહરિકૃષ્ણ મહારાજની મૂર્તિને સેવક યોગીયરણદાસ સ્વામીએ સ્વામીશ્રીના વક્ષઃસ્થળ પર પધરાવી હતી. છેલ્લાં ૨૦૦ વર્ષથી અક્ષરબ્રહ્મ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીથી લઈને સ્વામીશ્રી પર્યંત સતત જેમની પરાભક્તિ થઈ રહી છે એ હરિકૃષ્ણ મહારાજ એટલે સ્વામીશ્રીનું સર્વસ્વ! ઉન્મિલિત નયને એ શ્રીહરિકૃષ્ણ મહારાજનાં દર્શન કરતાં કરતાં જ સ્વામીશ્રીએ બરાબર ૬-૦૦ વાગ્યે અંતિમ શ્વાસ લીધા અને સ્વતંત્ર થકા દિવ્ય અક્ષરધામમાં મહાપ્રયાણ કર્યું. વર્ષોથી સ્વામીશ્રીની સેવા કરી રહેલા ડોક્ટરો અને સેવક સંતો અશ્રુભરી આંખે દિવ્ય અક્ષરધામમાં મહાપ્રયાણ કરી રહેલા આ મહાપુરુષનાં ચરણે વંદી રહ્યા.

આમ છતાં આશ્ચર્યની વાત એ હતી કે અંતિમ શ્વાસ લીધા પછી પણ સ્વામીશ્રી સ્વસ્થ અને ચેતનવંતા લાગતા હતા. તેઓના શરીરમાંથી પ્રસરતી કોઈ સહજ દિવ્ય સુગંધનો અનુભવ સૌને થતો હતો. સાચે જ, સ્વામીશ્રીના દિવ્ય શરીર પર મૃત્યુને બદલે એક પારલૌકિક ચેતનાનો પ્રભાવ નીરખી શકાતો હતો. સ્વામીશ્રીને સ્પર્શતાં કે તેમને નીરખતાં કોઈને કલ્પના પણ ન આવે કે તેમણે દેહત્યાગ કર્યો છે!

પરંતુ વાસ્તવિકતાનો અસ્વીકાર પણ થઈ શકે તેમ નહોતો. સતત નવ નવ દાયકાઓ સુધી ગામડે ગામડે અને શહેરે શહેરે અવિરત વિચરણ કરીને અસંખ્ય લોકોને આધ્યાત્મિક માર્ગે ઉન્નતિ કરાવનાર અલૌકિક વિભૂતિનું આ અંતિમ વિચરણ હતું. પાંચ વર્ષ પૂર્વે, ૪ જુલાઈ, ૨૦૧૧ના રોજ ઝાડેશ્વર-ભરૂચ ખાતે તેમના સ્વાસ્થ્યે લીધેલા અચાનક વળાંકને કારણે તેમનું વિચરણ મહદ્ અંશે નહીંવત્ કે સ્થગિત થઈ ગયું હતું. સતત ગામડે ગામડે ધૂમતા સ્વામીશ્રી સન ૨૦૧૧ના જુલાઈથી લઈને સન ૨૦૧૨ના માર્ચ સુધી મુંબઈ ખાતે તેઓ બિરાજ્યા હતા. ત્યારબાદ પુષ્પદોલોત્સવે

તેઓ સારંગપુર પધાર્યા અને ત્રણ મહિના સુધી સૌને દર્શનનું દિવ્ય સુખ આપ્યું. ત્યારબાદ ૧૪ જૂન, ૨૦૧૨ના રોજ પેસમેકરના પ્રત્યારોપણ માટે તેઓ અમદાવાદ પધાર્યા હતા. સતત સાડા દસ મહિના સુધી અમદાવાદમાં બિરાજીને સ્વામીશ્રીએ સૌને અપૂર્વ આધ્યાત્મિક લાભ આપ્યો. ત્યારબાદ ૫ મે, ૨૦૧૩થી તેઓ પોતાના પ્રિય તીર્થ સારંગપુર પધાર્યા. અહીં નિત્ય સવાર-સાંજ ભક્તોને અપૂર્વ આધ્યાત્મિક લાભ આપતા સ્વામીશ્રીએ ઓગસ્ટ ૨૦૧૪ દરમિયાન સારંગપુરથી બહાર પધારીને ગાંધીનગર, રોબિન્સવિલ (યુ.એસ.), અમદાવાદમાં લગભગ ૨૫ દિવસ ઐતિહાસિક લાભ આપ્યો હતો. ત્યારબાદ પુનઃ તેઓ સારંગપુર પધાર્યા અને કુલ ૧૨૦૦ દિવસો સુધી સારંગપુરમાં જ બિરાજીને બી.એ.પી.એસ. સંસ્થાના અનેક કાર્યો કર્યા. અને અંતે ૧૩ ઓગસ્ટ, ૨૦૧૬ના રોજ તેમણે અંતિમ શ્વાસ લીધા.

પોતાના પ્રાણથીય અધિક પ્યારા પ્રમુખસ્વામી મહારાજના ધામગમનની આ વેળા સૌ માટે એક અસહ્ય અને અકલ્પ્ય પળ હતી. સ્વામીશ્રી અચાનક જ આવી રીતે મહાપ્રયાણ કરશે એવી કોઈને કલ્પના પણ નહોતી. ક્ષણાર્ધમાં સારંગપુરમાં મંદિર પરિસર અને સમગ્ર સત્સંગ સમુદાયમાં વાત વહેતી થઈ ગઈ. પ્રાણપ્યારા ગુરુહરિના આ મહાપ્રસ્થાનથી માથા પર જાણે વીજળી તૂટી પડી હોય એવી અસહ્ય દુઃખની લાગણીમાં સૌ કોઈ ઝબકોળાઈ ગયા. ઠેરઠેર જુદી જુદી સેવાઓમાં પ્રવૃત્ત રહેલા સંતો તેમજ સદ્ગુરુ સંતો સારંગપુર ભણી વેગપૂર્વક આવવા લાગ્યા.

આ દરમિયાન અંતેવાસી સેવક સંતોએ સ્વામીશ્રીને વિધિવત્ સ્નાન કરાવ્યું. એ પૂર્વે, સ્વામીશ્રીએ અંતિમ શ્વાસ લીધા એ સમયે જ તેઓની આજ્ઞા અને ઈચ્છા અનુસાર ભદ્રેશદાસ સ્વામીએ ચારેય વેદોમાં આવતા અક્ષરપુરુષોત્તમ સિદ્ધાંતના મંત્રોનું સ્વલિખિત ભાષ્ય સ્વામીશ્રીનાં કરકમળોમાં અર્પણ કર્યું.

ત્યારબાદ સ્વામીશ્રીનો સ્નાનવિધિ શરૂ થયો. રોજ જે રીતે સ્વામીશ્રી સ્નાન કરતા હતા, તે જ રીતે આજે પણ સ્નાન કરાવાયું. સ્નાન કરાવતી વેળાએ પણ સંતોએ પુનઃ અનુભવ્યું કે મૃત શરીરની અકડાઈ કે જડતાને બદલે સ્વામીશ્રીમાં તો બિલકુલ સહજ ચેતનવંતા શરીરનો જ અનુભવ હતો! સ્નાન દરમિયાન ભદ્રેશદાસ સ્વામીએ અક્ષરબ્રહ્મના મહિમાના ઉપનિષદ-મંત્રોનું ગાન કર્યું. મંત્રગાન અને અનેકવિધ પ્રાર્થનાઓ વચ્ચે સ્વામીશ્રીનું સ્નાન સંપન્ન થયું.

થોડીવારમાં વરિષ્ઠ સદ્ગુરુ સંતો આવી પહોંચ્યા. પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી, પૂજ્ય ત્યાગવલ્લભદાસ સ્વામી, પૂજ્ય ઈશ્વરચરણદાસ સ્વામી, પૂજ્ય વિવેકસાગરદાસ સ્વામી વગેરે વરિષ્ઠ સંતોએ સ્વામીશ્રીનું કેસર-ચંદનથી અર્ચા કરીને પૂજન કર્યું. પછી તેઓનાં ચરણનું પણ પૂજન કર્યું. આ દરમિયાન પુનઃ અક્ષરબ્રહ્મના મહિમાના ઉપનિષદ મંત્રો તેમજ ‘શોભો સાધુગુણે...’ શ્લોકનું ગાન થયું.

ત્યારબાદ સ્વામીશ્રીને ‘સર્વસ્વ’ના પાછળના ભાગમાં આવેલી કાયની કુટિરમાં પધરાવવામાં આવ્યા. અહીં નારાયણમુનિદાસ સ્વામીના માર્ગદર્શન મુજબ બ્રહ્મચરણદાસ સ્વામીએ ડિઝાઈન કરેલી કાષ્ઠની કલાત્મક પાલખી લઈ આવવામાં આવી. સ્વામીશ્રીને તેમાં પધરાવવામાં આવ્યા. સેવક સંતોએ સ્વામીશ્રીના કંઠમાં કલાત્મક પુષ્પહાર અર્પણ કર્યો. અહીં ઉદ્યાનમાં સંતો ગુરુહરિનો ચરણસ્પર્શ કરીને તેમને ભાવભીની વંદના કરવા માટે ઉપસ્થિત હતા. સૌએ ગુરુહરિનાં ચરણોનો સ્પર્શ કરીને ધન્યતા અનુભવી.

સ્વામીશ્રીના ધામગમનના સમાચારો પ્રસરતાં જ ગણતરીની ક્ષણોમાં હજારો હરિભક્તો સારંગપુર આવી પહોંચ્યા હતા. મંદિર અને સ્મૃતિ મંદિરનું પ્રાંગણ હજારો બાઈ-ભાઈ હરિભક્તોથી ઊભરાઈ ગયું હતું. સૌ શિસ્તબદ્ધ બેસીને પ્રાણપ્યારા ગુરુહરિની પાલખીયાત્રાનાં દર્શનને ઝંખતાં હતાં.

૧૦-૪૫ વાગ્યે વરિષ્ઠ સંતો સ્વામીશ્રીને પાલખીમાં પધરાવીને ‘સર્વસ્વ’માંથી બહાર લાવ્યા. ઉપસ્થિત સેંકડો સંતોએ વારાફરતી પાલખી ઊંચકી. ધૂન કરતાં કરતાં મંદિરની પ્રદક્ષિણા ફરીને યજ્ઞપુરુષ સ્મૃતિ મંદિરે પાલખી લઈ આવવામાં આવી.

સ્વામીશ્રીના જીવનપ્રાણ સમા ગુરુહરિ શાસ્ત્રીજી મહારાજની મૂર્તિ સમક્ષ મધ્ય મંડપ તળે પાલખી પધરાવવામાં આવી. પરમ શિષ્ય તરીકે જેઓ આજ દિવસ સુધી પોતાના ગુરુને ક્ષણભર પણ નથી ભૂલ્યા, તે સ્વામીશ્રી આ છેલ્લી ક્ષણે પણ જાણે કે ગુરુ શાસ્ત્રીજી મહારાજનાં ચરણે મસ્તક ઝુકાવવા આવી પહોંચ્યા હતા! સ્વામીશ્રી જ્યારે જ્યારે અહીં દર્શને પધારે શ્રીહરિનાં ચરણારવિંદ પર રખાતી પ્રાસાદિક રજતશલાકાનો ખૂબ મહિમાપૂર્વક આંખે સ્પર્શ કરીને શાસ્ત્રીજી મહારાજને વંદન કરે. આજે પણ એ પ્રાસાદિક રજતશલાકા લાવીને સેવક નારાયણચરણદાસ સ્વામીએ

સ્વામીશ્રીનાં નેણ પર સ્પર્શ કરાવી, ત્યારે ગુરુ-શિષ્યની અપ્રતિમ પ્રીતિનું સહજ સ્મરણ થઈ આવ્યું હતું.

થોડીક ક્ષણોમાં ગુરુશિખરોમાં દર્શન કરાવી સ્વામીશ્રીને પાલખી સહિત કલામંડિત રથમાં વિરાજિત કર્યા. સંતો ગુરુભક્તિપૂર્વક તે રથનું વહન કરતાં કરતાં બી.એ.પી.એસ. વિદ્યામંદિરના વિશાળ પ્રાંગણમાં દોરી ગયા. અહીં બે વરસ પૂર્વે મૂર્તિમંડપ તૈયાર કરવામાં આવ્યો હતો. તેને જ દર્શનમંડપ બનાવવામાં આવ્યો હતો. ચારેકોરથી બંધ આ વિશાળ મંડપ વાતાનુકૂલિત કરવામાં આવ્યો હતો. આજથી સતત ચાર દિવસ માટે સ્વામીશ્રી આ દર્શનમંડપમાં લાખો ભક્તોના દર્શનાર્થે બિરાજમાન થવાના હતા. ૬૦ ફૂટ પહોળો, ૨૨ ફૂટ ઊંચો, ૧૦૫ ફૂટ લાંબો આ મુખ્ય મંડપ (ડોમ) ઉત્તર-દક્ષિણ લંબાઈમાં પથરાયો હતો. અહીં ગુરુપૂર્ણિમા ઉત્સવની તૈયારીઓ રૂપે ત્રણ-ચાર અઠવાડિયાં પૂર્વે ૨૩૪ ફૂટ લાંબા ને ૬૦ ફૂટ પહોળા બે વિશાળ ડોમ મંડપ, ૧૫૬ ફૂટ લાંબા ને ૮૦ ફૂટ પહોળા અન્ય બે વિશાળ ડોમ મંડપ પણ ઊભા કરાયા હતા. પ્રતીક્ષા સમયે હજારો દર્શનાર્થીઓ અહીં બેસીને વિશાળ એલ.ઈ.ડી. સ્ક્રીન પર સ્વામીશ્રીનાં સંસ્મરણો માણતા હતા. વળી દર્શનમંડપમાં પ્રવેશતાં પૂર્વે દર્શનાર્થીઓ ૧૮૦ ફૂટ લાંબો અને ૬૦ ફૂટ પહોળો એક વિશાળ મંડપમાં થઈને દર્શન માટે આગળ ધપતા હતા.

બરાબર સાંજે ૬-૦૦ વાગ્યે સ્વામીશ્રીએ અંતિમ શ્વાસ લીધા તેની થોડી જ ક્ષણોમાં બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાના સત્સંગપ્રવૃત્તિ મધ્યસ્થ કાર્યાલય દ્વારા હજારો કાર્યકરો તથા દેશવિદેશમાં વિચરણ કરતા સંતોને ટેક્સ્ટ મેસેજ દ્વારા સ્વામીશ્રીના અક્ષરધામગમનની જાણ કરવામાં આવી હતી. સમાંતરપણે સંસ્થાના પ્રચાર-પ્રસાર વિભાગ દ્વારા તાત્કાલિક ધોરણે વર્તમાનપત્રો અને ઇલેક્ટ્રોનિક માધ્યમોને પણ પ્રેસ રિલીઝ દ્વારા સ્વામીશ્રીના અક્ષરધામ- ગમનના સમાચાર પાઠવવામાં આવ્યા. દેશ અને રાજ્યની તમામ ટેલિવિઝન ચેનલો સતત સ્વામીશ્રીના સમાચાર પ્રસારિત કરવા માંડી. સંસ્થાની વેબસાઈટ પણ ક્ષણે ક્ષણે જરૂરી સૂચનાઓ સાથે સજ્જ થઈ ગઈ હતી. આ અવસરને લક્ષમાં રાખીને જ ગણતરીની મિનિટોમાં જ સ્વામીશ્રીનાં દિવ્ય જીવન, કાર્ય અને સંદેશની વિસ્તૃત માહિતી આપતી ખાસ નવી વેબસાઈટ (www.pramukhswami.org) પણ સતત ધમધમવા લાગી. દુનિયાભરના લોકો આ વેબસાઈટ પર સતત નજર નાંખતા રહ્યા.

પોતાના આ પ્રાણપ્યારા ગુરુહરિના અક્ષરધામગમનના સમાચાર પ્રાપ્ત થતાં જ સૌનાં હૈયાં ધબકાર ચૂકી ગયાં હતાં. સૌનું ચિત્ત હવે ગુરુહરિનાં અંતિમ દર્શનને હૈયે ધારવા ઝંખવા લાગ્યું. કોઈ નોકરી પરથી, કોઈ ધંધા પરથી, કોઈ ઘરેથી તો કોઈ પોતાના પ્રવાસ પરથી સીધા જ સ્વામીશ્રીનાં દર્શનને દોટ મૂકવા લાગ્યા. હજારો સ્વયંસેવકો પણ પોતાના વ્યવસાય વગેરેની પરવાહ છોડીને સ્વામીશ્રીની અંતિમ સેવા માટે સારંગપુર ભણી ગતિ કરવા લાગ્યા. આમ, થોડી જ ક્ષણોમાં સારંગપુર તરફ આવતા તમામ માર્ગો સ્વામીશ્રીનાં અંતિમ દર્શન માટે ઊમટતા હરિભક્તોના પ્રચંડ પ્રવાહથી ઊભરાવા લાગ્યા. દેશ- વિદેશનાં દૂર દૂરનાં કેન્દ્રોમાંથી ઊમટતાં એ આબાલવૃદ્ધ સ્ત્રી-પુરુષ હરિભક્તોને સ્વામીશ્રીનાં અંતિમ દર્શનનો લાભ પ્રાપ્ત થાય તે માટે સંસ્થાના વરિષ્ઠ સંતોએ વિમર્શ કરીને સ્વામીશ્રીની અંત્યેષ્ટિ વિધિનો સમય પણ ચાર દિવસ બાદનો નિર્ધારિત કરી લીધો.

આથી, ૧૩થી ૧૭ ઓગસ્ટ સુધી સ્વામીશ્રીના શ્રીવિગ્રહને દર્શન મંડપમાં પાંચ ફૂટ ઊંચા મંચ પર પધરાવવામાં આવ્યો હતો. ચાર-ચાર દિવસ સુધી સ્વામીશ્રીના દિવ્ય શરીરનાં સારી રીતે દર્શન કરી શકાય તે માટે સંસ્થાના ટેકનિકલ નિષ્ણાતોએ તાત્કાલિક ધોરણે માઈનસ ૧૦ ડિગ્રી તાપમાનયુક્ત ૮ ફૂટ ઊંચા કાચ-કક્ષની વ્યવસ્થા કરી હતી. ૧૦×૮ ફૂટના કાચકક્ષની ત્રણ બાજુએથી દર્શનાર્થીઓ દર્શન કરી શકે તેવી વ્યવસ્થા હતી.

કૌરવકર્મ કરાવેલા સ્વામીશ્રીના સૌમ્ય મુખારવિંદ પર પરબ્રહ્મના સુખની પરમ શાંતિ છવાઈ હતી. ભાલમાં કેસરચંદનની અર્યા, કંઠમાં પુષ્પોનો હાર અને મસ્તક પર પાઘ ધારણ કરેલી સ્વામીશ્રીની ઢળેલાં પોપચાંવાળી મૂર્તિ જાણે હમણાં ધ્યાનમાંથી જાગ્રત થઈને ‘જય સ્વામિનારાયણ’ કહેશે એવી જીવંતતા અને દિવ્યતા અનુભવાતી હતી.

ખૂબ મોટી સંખ્યામાં ઊમટતા હરિભક્તોને ગુરુહરિનાં આ અંતિમ દર્શનનું સુખ સારી રીતે પ્રાપ્ત થાય તે માટે સત્સંગપ્રવૃત્તિ મધ્યસ્થ કાર્યાલય દ્વારા સુંદર આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જુદી જુદી તારીખે જુદાં જુદાં કેન્દ્રોના હરિભક્તો દર્શનાર્થે પધારે તેવી વિગતો પણ ટેક્સ્ટ સંદેશ તેમજ સંસ્થાના કાર્યકરો દ્વારા ઠેરઠેર પહોંચાડવામાં આવી હતી. શરૂઆતમાં સવારના ૭-૩૦થી રાતના ૧૨-૦૦ વાગ્યાનો સમય દર્શન માટે વિચારવામાં આવ્યો હતો. પરંતુ

તા. ૧૩મી ઓગસ્ટની પ્રથમ રાત્રિએ જ અવિરત દર્શનાર્થીઓનો પ્રવાહ વહેતો રહ્યો. આથી, ચોવીસે કલાક દર્શનની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી. પ્રથમ રાત્રિથી જ ૬,૦૦૦ જેટલા સ્વયંસેવકો અને સંતો ૩૬ જેટલા સેવાવિભાગોમાં સક્રિયપણે પોતાની સેવામાં દર્શનાર્થીઓની વ્યવસ્થામાં ખડેપગે જોડાઈ ગયા હતા.

દર્શનાર્થે ઊમટતા હરિભક્તો પાર્કિંગથી માંડીને છેક ગુરુમંડપ સુધી પધારે ત્યાં સુધી સુંદર વ્યવસ્થા ગોઠવવામાં આવી હતી. પુરુષો અને મહિલાઓ માટે અલગ અલગ પ્રતીક્ષા-મંડપો અને દર્શનહરોળનું આયોજન કરાયું હતું. મહિલાઓના અને પુરુષોના બે બે મંડપો(ડોમ)માં તથા ગુરુદર્શન મંડપમાં ૧૨×૨૦ ફૂટની લંબાઈ-પહોળાઈ ધરાવતા કુલ આઠ એલ.ઈ.ડી. સ્ક્રીન ઊભા કરાયા હતા, જેમાં સ્વામીશ્રીનાં દિવ્ય દર્શનની સ્મૃતિઓને તાદૃશ્ય કરવામાં આવી રહી હતી. અહીંથી ક્રમે ક્રમે, સ્વયંસેવકોની સૂચના મુજબ દર્શનાર્થીઓ ખૂબ શિસ્તપૂર્વક, ધાંધલ વગર ગંગાના પ્રવાહની જેમ દર્શનમંડપમાં આવ્યે જ જતા હતા.

અહીં મહિલાઓ અને પુરુષોની અલગ હરોળો અને અલગ પ્રવેશદ્વાર હતાં. ચારથી છ જેટલા ભક્તોની પંક્તિમાં સૌ સતત હરોળબદ્ધ દર્શનમંડપમાં અંદર આવતા ત્યારે કણેકણ સ્વામીશ્રીમય અનુભવાતું હતું. અનેક ધારણાઓ સાથે દર્શનમંડપમાં પ્રવેશતાં જ સૌને દિવ્યતાનો અનુભવ થતો હતો. અહીં મૃત્યુનો અંધકાર નહીં, પરંતુ અમરત્વનો જાણે દિવ્ય ઉજાસ પથરાયેલો અનુભવાતો હતો! સૌને અનુભવાતું હતું કે કલાત્મક પાલખી પર વિરાજમાન સ્વામીશ્રી તો જાણે સચેતન અવસ્થામાં જ સૌને કૃપાદર્શન આપવા બિરાજમાન થયા છે! તેમનાં એ દર્શને જ સૌને અદ્વિતીય દિવ્ય અનુભૂતિઓ થતી, અને સહેજે જ હૃદયેથી પ્રાર્થનાઓ વહેવા લાગતી. પ્રિયતમ સ્વામીશ્રીનાં એ દર્શન કરતાં જ સહજતયા ઊભરાતી સ્નેહની લાગણીઓ ભલભલાની આંખોના બંધ ખોલી નાંખતી હતી.

ગુરુદર્શન મંડપમાં સ્વામીશ્રીની સન્મુખ નીચે દોઢેક ફૂટ ઊંચી વેદિકા રચી હતી. તેના પર શ્રીહરિનાં ચરણારવિંદ પધરાવ્યાં હતાં. દર્શનાર્થી ભાવિકો પુષ્પહાર, પુષ્પછડી જે કંઈ લાવતા તે સઘળું અર્ધ્ય અહીં ચરણારવિંદ પર અર્પણ થતું હતું. સ્વયંસેવકો હાથ જોડીને સૌને ચાલતા રહેવા સૂચિત કરી રહ્યા હતા. સતત ‘ૐ સ્વામિનારાયણ નમઃ’નો જાપ સ્વામીશ્રીના પ્રાસાદિક કંઠે રેલાઈ રહ્યો હતો. સાચે જ એક દિવ્યાનુભૂતિ હતી - એ દર્શનની, એ ઝલકની! ♦

નિબંધ-૩ :

પ્રમુખસ્વામી મહારાજને દેશ-વિદેશના ધર્મધુરંધરોની ભાવાંજલિ...

વિશ્વ અને ભારતના અનેક ધાર્મિક સમુદાયોના વડાઓ, ધર્મગુરુઓ, ધર્મસંસ્થાનો વગેરેએ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજને હૃદયપૂર્વક ભાવાંજલિ અર્પી છે. હિંદુ, બૌદ્ધ, જૈન, શીખ, ખ્રિસ્તી, મુસ્લિમ, યહૂદી વગેરે તમામ ધર્મોના વડાઓ અને પ્રતિનિધિઓએ પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પ્રત્યે જે અપાર સ્નેહ અને આદર દર્શાવ્યો છે તે નતમસ્તક બનાવે છે. હિંદુ ધર્મના વિવિધ સંપ્રદાયોના ધુરંધરો તેમજ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયની - વરતાલ, અમદાવાદ, મણિનગર, રાજકોટ-છારોડી-ગાંધીનગર ગુરુકુળો, વડોદરા, સોખડા, વિદ્યાનગર, મોગરી, વાસણા વગેરે વિવિધ શાખાઓના વડાઓ અને તેમના પ્રતિનિધિઓએ પણ પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીને સ્નેહભાવે આદરાંજલિ અર્પી છે. દેશ-વિદેશના આ તમામ ધર્મવડાઓએ ટ્વિટર, પત્રો કે સંબોધનો દ્વારા પરમ પૂજ્ય સ્વામીશ્રીને અર્પેલી વાકપુષ્પાંજલિઓમાંથી સ્થળસંકોચને કારણે કેટલાક અંશો અત્રે પ્રસ્તુત છે:

પૂજ્ય શ્રી મ.મં. સ્વામી સત્યમિત્રાનંદગિરિજી મહારાજ (પૂર્વ શંકરાચાર્ય)

પ્રમુખસ્વામી મહારાજને અનેક વખત મળવાનું સૌભાગ્ય મને મળ્યું છે. હું ગંગા મૈયાના તટ પર રહું છું. ગંગાને માતા માનું છું, પરંતુ તેના તરંગોથી ડર લાગે છે. પરંતુ સમગ્ર વિશ્વ માટે એક અન્ય વાત્સલ્યની ગંગા પ્રગટ થઈ હતી - પ્રમુખસ્વામી મહારાજ. તેમની પાસેથી કોઈ નિરાશ થઈને જાય નહીં. જે જેવી ભાવનાથી તેમની પાસે ગયા, તેવી તેમને અનુભૂતિ થઈ. હું કેવો ભાગ્યશાળી સાધુ છું કે જેમનું સૌ કોઈ સ્મરણ કરે એવા પ્રમુખસ્વામીજી મને યાદ કરતા હતા. એ કરોડો લોકો વચ્ચે સત્યમિત્રાનંદ એમની નજરે ચઢતા હતા. એવા મહાપુરુષની દૃષ્ટિ પ્રાપ્ત કરવાનું મહાન સૌભાગ્ય મને મળ્યું છે. ભારતમાતા મંદિરના નિર્માણ સમયે હું જ્યારે જ્યારે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ સમક્ષ બેસીને વ્યથા ઠાલવતો હતો ત્યારે, વરદ હસ્ત ઊંચો કરીને તેઓ કહેતા હતા: ‘સત્યમિત્રાનંદ તમે ચિંતા ન કરો. ભારતમાતા મંદિર નિશ્ચિત રીતે બનશે જ. સાચે જ, મારી સફળતાનું શ્રેય મને નહીં, એ સંતો અને પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજને આપવું જોઈએ, જેમણે નિરંતર બળ આપ્યું.

જગદ્ગુરુ શંકરાચાર્યના આસન પર બિરાજમાન થયા વિના મેં જેમનામાં જગદ્ગુરુત્વનાં દર્શન કર્યાં છે, એ છે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ. તેઓ તો સાક્ષાત્ ભગવાનું સ્વરૂપ હતા. શાસ્ત્રોમાં ભગવાનનાં જેટલાં લક્ષણો કહ્યાં છે, તે બધાં જ તેમનામાં હતાં.

જીવનના કઠિન સંજોગોમાં જ્યારે જ્યારે તેમનું ધ્યાન કરીએ ત્યારે તેમને આપણી પાસે જ ઊભેલા અનુભવીએ. જેમ વહેલી સવારે સૂર્યોદય થાય છે, અને આપોઆપ બધાં જ ઘરોમાં તેનો ઉજાસ ફેલાય છે. તેમ પ્રમુખસ્વામીજી એક શાશ્વત આદિત્ય છે. એમના સ્મરણ માત્રથી એમનાં કિરણો આપણા પર પ્રભાવ પાથરે છે અને તમામ કષ્ટો મિટાવી દે છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજ ખૂબ હસતા હતા. તેઓ ક્યારેય ઉદાસ ન હોય. કારણ કે તેઓ પ્રગટ બ્રહ્મ હતા. એટલે જ એમને આ શ્રદ્ધાંજલિ અર્પું છું, તેમાં મારી સાધના અને આરાધના વૃદ્ધિ પામે છે. પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજ મલયાચલ સમાન હતા. મલયાચલમાં ચંદનવનમાં લીમડો, બાવળ જેવાં અન્ય વૃક્ષો પણ ઊગે છે. પરંતુ વર્ષો સુધી ચંદન વૃક્ષોની

સાથે રહેવાથી તેમાં પણ ચંદનની સુગંધ બેસી જાય છે. બજારમાં ઘણી વખત તેનું લાકડું પણ ચંદન તરીકે ચાલી જાય છે. એમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સંગે સાધારણ માણસ પણ અસાધારણ બની જાય છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એવો આધ્યાત્મિક હિમાલય હતા કે જેમાં કઠોરતા નહોતી. તેમનામાંથી પ્રગટતી સદાચાર, ભક્તિ અને વાત્સલ્યની ધારાઓમાં તેમણે સૌને સ્નાન કરાવ્યું છે. બુદ્ધ, મહાવીર અને આદિ શંકરાચાર્ય પછી વિશ્વમાં સૌથી વધુ આદર પામ્યા હોય તો તે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ છે. એટલે જ હું તેમને યુગપુરુષ, યુગાવતાર અને વિશ્વના સર્વશ્રેષ્ઠ સંત માનું છું. દિવસે, રાત્રે, બહાર, અંદર સર્વત્ર એમના જેવું પારદર્શક જીવન જીવવાવાળા દિવ્ય પુરુષ માત્ર પ્રમુખ સ્વામીજી જ હતા. મારા માટે તેઓ આદિ શંકરાચાર્ય જેટલા જ પૂજનીય રહ્યા છે.(સંબોધન)

પૂજ્ય શ્રી મોરારિ બાપુ (અભિનવ તુલસી, પ્રસિદ્ધ સંત)

ભગવાન સહજાનંદ સ્વામી મહારાજના આ ધરતી પરના અવતરણ પછી જે પાવન પરંપરા વહી તેમાં, મને અનેક વખત જેમનો લાભ મળ્યો છે, એવા પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી બાપા બ્રહ્મલીન થયા. પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એટલે જાણે સાદગી, સરળતા અને સાધના આ ત્રણનો એક સંગમ આ ધરતી પર વિચરણ કરતો હતો. ગુરુકૃપાથી, ભગવાનની કૃપાથી આટલી ઊંચાઈએ ગયા પછી સાદગી ટકી જાય, સરળતા ટકી જાય, અને સાધનાની તો ખબર જ ન પડે કે મહાપુરુષની કઈ સાધના હશે, એ બહુ દુર્લભ વસ્તુ છે. આવો સંગમ મેં પૂજ્ય બાપામાં નિહાળ્યો છે. મેં જ્યારે જ્યારે દર્શન કર્યાં, જ્યારે જ્યારે મળવાનું થયું ત્યારે મારા તરફ તેઓનો ખૂબ જ સ્નેહાદર અનુભવ્યો છે. એ એમની મોટાઈ બડપ્પન, એમની સાધુતા. ક્યારેક સ્વામી સાથે જમવાનો અવસર મળ્યો, ક્યારેક કથામાં એક મંચ પર મળવાનું થયું છે. મહુવા પધારે ત્યારે હું હોઉં તો દર્શન કરવા જાઉં. અને છેક સુધી મને યાદ રાખે. એવા સાધુપુરુષ માટે એટલું જ કહીશ કે એમણે વિદાય નથી લીધી. એ બધામાં વિલીન થયા છે. આત્મા જો ન મરતો હોય તો મહાત્મા કેમ મરી શકે? એ તો મહાત્મા છે. બાપાની વિદાય કણ કણમાં વિસ્તરી છે. એક ધર્મપુરુષના નિર્વાણના સમયે આટલો આદર ને પૂજ્યભાવ વ્યક્ત થયો હોય એવું મારી જાણમાં નથી. આ એમનાં તપ, ત્યાગ, સરળતાનું પ્રમાણ છે. એમાંથી આપણે ઘણું શીખી શકીએ, પ્રાપ્ત કરી શકીએ. બ્રહ્મલીન પ્રમુખસ્વામી બાપાની ચેતનાને મારા વારંવાર પ્રણામ.(સંબોધન)

પૂજ્ય શ્રી સ્વામી રામદેવજી મહારાજ (યોગાચાર્ય)

છેલ્લા બે દાયકાઓમાં મેં સતત પ્રમુખસ્વામી મહારાજના (તરફથી) સ્નેહ અને આશીર્વાદ માણ્યા છે. આવા મહાત્માઓ મહાન કાર્યો માટે જ અવતરે છે. વેદો-ઉપનિષદો-શાસ્ત્રોમાં આપ્ત- પુરુષ, બ્રહ્મપુરુષ, પૂર્ણ પુરુષ, પૂર્ણ યોગી-સંન્યાસીનું જે મૂર્તિમંત સ્વરૂપ દર્શાવ્યું છે, તે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ હતા, જેઓ આપણી સંન્યાસ પરંપરા, ઋષિ પરંપરા, ગુરુ પરંપરાના ગૌરવ પુરુષ હતા.

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।

स संन्यासी च योगी च न निरग्निरन चाक्रियः ॥

પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો બોધ, એમનો આદર્શ, એમનું ચરિત્ર, બધું જ દિવ્ય હતું. તેઓ બહુ ઓછું બોલતા, પરંતુ તેમનું મૌન જ બધું જ કહી દેતું હતું. છેલ્લાં વીસેક વર્ષોમાં મેં અનેકવાર સ્વામીજીનું સાંનિધ્ય પ્રાપ્ત કર્યું હતું.

આવા મહાપુરુષ સદીઓ પછી જન્મે છે. ભગવાનના આદેશથી, ભગવાનના કાર્ય માટે સ્વયં બ્રહ્મે આવા મહાપુરુષ રૂપે મૂર્ત સ્વરૂપ ધારણ કર્યું હતું. યુગો સુધી તેમનું સ્મરણ થતું રહેશે.

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે ગીતામાં કહ્યું, સંન્યાસી કોણ છે? યોગી કોણ છે? બ્રહ્મરૂપ થઈને જે ભક્તિરૂપે કર્મ કરતા હોય, એ જ સંન્યાસી છે, એ જ યોગી છે.

એવા સાક્ષાત્ પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજને સૌ સંતો અને સવા સો કરોડના રાષ્ટ્ર દ્વારા કોટિ કોટિ પ્રણામ.(દિવટ, સંબોધન)

પૂજ્ય શ્રી શ્રી રવિશંકર મહારાજ (પ્રણેતા, આઈ ઓફ લિવિંગ, બેંગલોર)

પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામીજી વર્તમાન સમયના સૌથી મહાન સંતોમાંના એક હતા. એમની સરળ જીવનશૈલીની ભીતરમાં ઉચ્ચ આદર્શોનો ખજાનો છુપાયેલો હતો. તેઓ એક નિષ્ઠાવાન અનુયાયી, શ્રેષ્ઠ નેતા અને પ્રેમાળ માર્ગદર્શક હતા. યુવાથી લઈને વૃદ્ધ, સૌ કોઈનો અગાધ આદર તેમણે સંપાદન કર્યો હતો.

માનવજાતને સમર્પિત એવી તેમની અભૂતપૂર્વ સેવાઓ સદાને માટે યાદ રખાશે અને તેમની સ્મૃતિ સ્વામિનારાયણ આંદોલનને પ્રેરણા આપતી રહેશે. (દ્વિત, પત્ર)

પૂજ્ય સ્વામી શ્રી ચિદાનંદજી મહારાજ (પરમાર્થ નિકેતન, ઋષિકેશ)

પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એક સમુદ્ર સમાન સંત હતા, જેઓ પોતાના માટે નહીં, સૌ માટે જીવ્યા. પોતાના આશ્લેષમાં તેમણે સમગ્ર વિશ્વને સમાવ્યું હતું. આવા સંત ક્યારેય જતા નથી, તેઓ પોતાના વિચારો, દિવ્ય સંસ્કારો, ઉપદેશ અને આદેશ દ્વારા સદા આપણા સૌની વચ્ચે જીવે છે. કલામ સાહેબથી લઈને કુલી સુધી સૌની સંવેદનાઓ, પ્રધાનમંત્રીથી લઈને પંચાયતના સભ્ય સુધી સૌની પ્રાર્થનાઓ, એમના ભાવ આ મહાન સંત પ્રત્યેની શ્રદ્ધા દર્શાવે છે. એક ‘બોર્ડરલેસ વર્લ્ડ’ બનીને સૌની વચ્ચે જીવ્યા. એમના જીવનમાં ન કોઈ પ્રકારનો અવરોધ હતો, ન કોઈ ભેદભાવની સીમા હતી. હવે લાગે છે કે આવું દિવ્ય આદર્શ વ્યક્તિત્વ આ પૃથ્વી પર આવીને વિદાય થઈ ગયું. આ ધરતી પર આવીને એક સાધારણ વ્યક્તિત્વની જેમ રહીને એ અસાધારણ વ્યક્તિ બની રહ્યા. ભવ્યતા અને દિવ્યતાનો તેઓ સમન્વય હતા. તેમણે સૌને પોતપોતાના ધર્મ અનુસાર ચાલવાનું શીખવ્યું, એ એમના દિલની વિશાળતા હતી. મુંબઈના એરપોર્ટ પર લખ્યું હતું: ‘હૈયે ભારતીય, ખુમારીમાં વૈશ્વિક.’ પ્રમુખસ્વામી મહારાજે પણ એવો જ મંત્ર આપ્યો છે કે પોતાની સંસ્કૃતિ, સંસ્કારો, વિચારોને દિલમાં રાખો, પરંતુ જીવો ગ્લોબલ બનીને. કોઈ દીવાલ કે કોઈ તિરાડ વિના આ સંતે એ વિચારને જનજન સુધી ફેલાવ્યો છે. ગુજરાતીમાં એક કહેવત છે કે ‘જ્યાં જ્યાં વસે એક ગુજરાતી, ત્યાં ત્યાં સદાકાળ ગુજરાત.’ મને તો લાગે છે કે જ્યાં જ્યાં પ્રમુખસ્વામીજી હતા, ત્યાં ત્યાં વસતું હતું હિન્દુસ્તાન. સમગ્ર સંસ્કૃતિનું દર્શન તેઓ સૌ કોઈને કરાવતા હતા.

ભારત એટલા માટે મહાન નથી કે તેની પાસે તાજમહાલ છે, લાલકિલ્લો છે, વધી રહેલી ભૌતિક સંપત્તિ છે, હિમાલય છે, ગંગા છે; પરંતુ ભારત એટલા માટે મહાન છે કે તેની પાસે હિમાલયની ઊંચાઈવાળા, ગંગા જેવી પવિત્રતાવાળા પ્રમુખસ્વામી મહારાજ જેવા સંત છે.

પ્રમુખસ્વામી મહારાજ આપણી સંસ્કૃતિના વિશ્વ-રાજદૂત હતા. ઘણીવાર લોકો કહે છે કે એકમુખી રુદ્રાક્ષ મળી જાય તો, સર્વસિદ્ધિ અને સર્વ સફળતા મળી જાય. પરંતુ બહુમુખી પ્રતિભાના માલિક પ્રમુખસ્વામીજીએ એકમુખી રુદ્રાક્ષ નથી પહેર્યો, પરંતુ તેઓ સ્વયં એકમુખી બની ગયા છે! તેઓ શિક્ષાપત્રીનું જ જીવંત સ્વરૂપ નહીં. તેઓ તો સ્વયં દીક્ષાપત્રી હતા. તેઓ એવા ગુરુ હતા કે તેઓ જેને પણ સ્પર્શે તે પારસ બની જતા હતા. (સંબોધન)

પૂજ્ય સ્વામી શ્રી વિમલાનંદજી મહારાજ (અધ્યક્ષ, દિવ્યજીવન સંઘ, ઋષિકેશ)

પરમ આદરણીય અને પૂજનીય શ્રી પ્રમુખસ્વામી મહારાજના ધામગમનથી અમને અત્યંત દુઃખ થયું છે. અમને સૌને એક મહાન ખોટ પડી છે. વિશ્વ સમસ્તના અગણિત સાધકો માટે તેઓ પ્રેરણાસ્ત્રોત હતા. તેઓનાં મહાન પ્રદાનો વિશ્વભરના અગણિત લોકોને હંમેશાં પ્રેરણા આપતાં રહેશે.

એ સમજણથી આપણને થોડી સાંત્વના મળશે કે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પોતાની દિવ્ય વિરાટ શક્તિથી હવે સદાય આપણી સાથે રહેશે. આપણા સૌ પર તેઓની કૃપા અને માર્ગદર્શન વરસતાં રહેશે. સ્વામી શિવાનંદજી મહારાજ, શ્રી સ્વામી ચિદાનંદજી મહારાજ અને શિવાનંદ આશ્રમના તમામને માટે પ્રમુખસ્વામી મહારાજના હૃદયમાં વિશેષ સ્થાન હતું. અમારા સૌ પર વરસતા તેઓના અત્યંત તૃપ્તિ પમાડનારાં સ્નેહ અને કરુણાવર્ષા બદલ અમે પ્રમુખસ્વામી

મહારાજના સદા ઋણી રહીશું.(૫૩)

જગદ્ગુરુ શ્રી શંકરાચાર્ય વિદ્યાનરસિંહ ભારતીજી (કરવીર પીઠ)

પરમ આદરણીય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના અક્ષરધામગમનના સમાચાર સાંભળી અત્યંત દુઃખ થયું છે. તેમની વિદાયથી ભરપાઈ ન થઈ શકે તેવી ખોટ સમગ્ર સમાજને પડી છે. તેમને હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ.(દ્વિવટ)

પૂજ્ય ત્રિદંડી ચિન્ના નારાયણ રામાનુજાચાર્ય સ્વામી (આંધ્રપ્રદેશ)

શીલ-જ્ઞાન-વયોવૃદ્ધ, લોકહિતૈષી પરમશ્રદ્ધેય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે પોતાના સેવા-સિદ્ધાંતને વિશ્વવ્યાપી સ્વરૂપે વિસ્તાર્યો હતો. સુશિક્ષિત, વિનયસંપન્ન, કાર્યકુશળ શિષ્યસમુદાય તેમણે તૈયાર કર્યો. પ્રમુખસ્વામીજીએ અનેક ગુણ-સમર્થતાયુક્ત સંતસમાજનું નિર્માણ કર્યું. તેમની કૃપાથી આપ સૌનો વ્યવહાર, ગુરુનિષ્ઠા, વિનય-વિધેયતા, પરસ્પર સૌહાર્દ જેવા ગુણોથી હરહંમેશ આનંદ અનુભવાય છે.(૫૩)

પૂજ્ય શ્રી મહામંડલેશ્વર વિશ્વંભર ભારતીબાપુ (જૂનાગઢ)

ગુજરાતનું જ ગૌરવ નહીં, પણ આખા વિશ્વના ગૌરવ સમાન પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજને ભાવાંજલિ. આ મહાન સંતે પોતાની ચિંતા ન કરીને જગતના તમામની ચિંતા કરીને તેમનું હિત ઈચ્છ્યું હતું. દુનિયાના તમામ દેશોમાં વિચરણ કરીને હિંદુ ધર્મની સૌને સાચી ઓળખ આપી છે. દેશ-વિદેશમાં કરોડો લોકોને ધર્મની પ્રેરણા આપનાર પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજે તૈયાર કરેલા સાધુઓએ ચારિત્ર્યની એક જબરજસ્ત છાપ ઊભી કરી છે. રાષ્ટ્ર અને આખા વિશ્વના ગૌરવ સમાન વિશ્વવંદનીય સંત પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજને ખૂબ ભાવપૂર્વક સમસ્ત સાધુ સમાજ વતી ભાવાંજલિ.(સંબોધન)

પૂજ્ય શ્રી સ્વામી હરિનારાયણાનંદજી મહારાજ (મહામંત્રી, અખિલ ભારત સાધુ સમાજ)

કેટલાંય વર્ષો સુધી પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજ સાથે મારો ઘનિષ્ઠ સંબંધ રહ્યો. જેમાં દંભ, ઘમંડ, પાખંડ ન હોય એવા મહાત્માઓ બહુ ઓછા જોયા છે. મેં ગાંધીજીને પણ જોયા છે. પરંતુ સ્વામીજીમાં ક્યારેય છલ કે ઘમંડ અનુભવ્યો નથી. ભારતવર્ષમાં છેલ્લી ચાર-પાંચ સદીઓમાં એવો કોઈ મહાત્મા થયો નથી જેણે એક હજાર જેટલા સુશિક્ષિત યુવાનોને સંન્યાસની દીક્ષા આપી હોય. મનુષ્યના જીવન અને મૃત્યુ બાદ તેની ચાર પ્રકારની ગતિ હોય છે. એ ગતિઓ પર નિયંત્રણ કરવાની શક્તિ પ્રમુખસ્વામી મહારાજમાં મેં જોઈ છે. તેમનામાં આત્મશક્તિ, અધ્યાત્મશક્તિ પરિપૂર્ણ હતી. હું કોઈ વાંચેલી કે કોઈની લખેલી વાત નથી કરતો. પરંતુ પ્રમુખસ્વામીજીના જીવનને નિકટતાથી જોઈને, એમના જીવનનો સ્વયં અનુભવ કરીને કહું છું. આવા મહાપુરુષ અદ્વિતીય છે, જેમનામાં લોભ, લાલચ, ઈર્ષ્યા, ઘૃણા એવી કોઈ જ ભાવનાઓ નહોતી. આવા સંત સાક્ષાત્ ભગવાનનું જ સ્વરૂપ છે. આજે તેઓ આપણી વચ્ચે નથી તેથી અમે સૌ ખૂબ જ દુઃખી છીએ. ભારતના તમામ સંપ્રદાયો વતી સમગ્ર ભારત સાધુસમાજ તેમનાં ચરણોમાં શ્રદ્ધાંજલિ અર્પણ કરે છે.(સંબોધન)

પૂજ્ય શ્રી ડૉ. પ્રણવ પંડ્યા (અધ્યક્ષ, ગાયત્રી પરિવાર, હરિદ્વાર)

પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજનું મહાપ્રયાણ એ સમગ્ર વિશ્વ માટે એક અપાર ક્ષતિ છે. તેઓ વ્યક્તિગત રૂપે મારા પર ખૂબ જ વાત્સલ્ય વરસાવતા હતા. હું એમને જ્યારે પણ મળ્યો છું, ત્યારે માનવજાતિના ઉત્કર્ષ, દુઃખનું નિવારણ, સંસ્કૃતિના વિશ્વવ્યાપી વિસ્તાર અંગે ગંભીર ચર્ચા કરી છે. બાળકોને સંસ્કારવાન બનાવવાના તેઓ પક્ષધર હતા. તેમના

દ્વારા પ્રતિષ્ઠિત દિલ્હી, ગાંધીનગર, લંડન, ટોરન્ટો વગેરે અક્ષરધામ અને મંદિરો ચિરંતન સમય સુધી તેમની સ્મૃતિ કરાવતાં રહેશે. તેઓ ગાયત્રી પરિવારની પ્રવૃત્તિઓને હંમેશાં પોતાનું જ કાર્ય માનતા હતા. દેશ-વિદેશમાં સાત-સાત દશાબ્દીઓ સુધી ભગવાન સ્વામિનારાયણનું જ્ઞાન પ્રસરાવનારા એક સાચા યોગી, સાચા સંત, નિર્મળ હૃદયી અને પરમાત્માના પ્રતિબિંબ સમાન મહાપુરુષને આપણે ખોયા છે. અખિલ વિશ્વ ગાયત્રી પરિવારના કરોડો પરિજનો વતી તેમને ભાવપૂર્ણ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ કરું છું. આવા મહાપુરુષ, મુક્તપુરુષનું ક્યારેય મૃત્યુ હોતું નથી. તેઓ હંમેશાં અમર રહે છે. સ્થૂળ શરીરનાં બંધનોથી પર થઈને તેઓ સૂક્ષ્મ રીતે માર્ગદર્શન, પ્રેરણા અને આશીર્વાદ વરસાવતા રહેશે. (પત્ર)

પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી ધર્મેન્દ્રજી મહારાજ (પંચાનંડ પીઠાધીશ, જયપુર)

ભારત અને સંપૂર્ણ વિશ્વમાં સત્ય સનાતન ધર્મની કીર્તિધ્વજા ફરકાવનાર પરમ વંદનીય પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ શ્રી પ્રમુખસ્વામી મહારાજ પોતાની દિવ્ય લીલાનું સમાપન કરીને અંતર્ધાન થઈ ગયા છે, એ સમાચાર મારા માટે અત્યંત પીડાદાયક છે. કારણ કે વંદનીય પ્રમુખસ્વામી મહારાજની મારા પર જે અનન્ય કૃપા અને મમતા હતી તેને વીસરવાનું મારા માટે અસંભવ છે.

સંપૂર્ણ વિશ્વમાં દિવ્યતમ અને ભવ્યતમ સહસ્રાધિક મંદિરોનું નિર્માણ કરીને પ્રમુખસ્વામીજીએ જે અનુપમ અને અદ્વિતીય કીર્તિમાન સ્થાપિત કર્યા છે તે આવનારી અનેક શતાબ્દીઓ સુધી પ્રેરણા, ઊર્જા અને શક્તિનો સંચાર કરતાં રહેશે. સ્વાસ્થ્યને કારણે હું મારા અત્યંત પ્રિય સ્વામીજી મહારાજનાં પાવન દેહના અંતિમ દર્શન નથી કરી શક્યો, પરંતુ તેમની દિવ્ય છબિ મારા અંતઃકરણમાં અમીટ અને અક્ષુણ્ણ છે અને રહેશે.

હું શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ સ્વામિનારાયણ ભગવાનને પ્રાર્થના કરું છું કે તેઓ અમારા પરમ પ્રિય પ્રમુખસ્વામી મહારાજને પુનઃ ભારતમાતાની ગોદમાં અવતરિત કરવાની કૃપા કરે. કારણ કે આ ઘનઘોર કલિકાળમાં પથબ્રષ્ટ માનવજાતને પુનઃ સાચા પથ પર લઈ જવા માટે આ પૃથ્વી પર એમનું પુનઃ અવતરણ પરમ આવશ્યક છે.

અમારા સૌના પ્રિય હે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ! આ પ્યારી ભારતમાતાની ગોદને સુશોભિત કરવા માટે આપ પુનઃ આ વસુંધરા પર પધારો... (પત્ર)

પૂજ્ય શ્રી રમેશભાઈ ઓઝા (પ્રસિદ્ધ કથાકાર, સાંદિપની આશ્રમ)

પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામીજીની વિદાયથી ભારતીય સંન્યાસના ત્યાગ અને સેવાપૂર્ણ જીવનનો એક ગૌરવપૂર્ણ અધ્યાય સમાપ્ત થયો છે. પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના માર્ગદર્શનમાં સંપ્રદાયનાં સેંકડો મંદિરો દેશ અને વિદેશમાં બન્યાં. તેમણે

ભારતીય સંસ્કૃતિને દેશ-વિદેશના ખૂણે ખૂણે પહોંચાડવામાં, સંપ્રદાયના સિદ્ધાંતોને કર્મઠતાથી વિસ્તારવામાં બહુ મહત્વનો ફાળો આપ્યો. આ મહાપુરુષે અનેક સામાન્ય માણસોની સાથે સીધો સંપર્ક કર્યો. એમણે જેટલા પત્રો લખ્યા છે ને એ દ્વારા સાધકોનું માર્ગદર્શન કર્યું છે, જનતાનું માર્ગદર્શન કર્યું છે, એ કદાચ બીજા કોઈ ધર્મગુરુએ આટલો પત્રવ્યવહાર ભાગ્યે જ કર્યો હશે!

પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ વાત્સલ્ય અને પ્રેમનું સ્વરૂપ હતા. જે કોઈ એમને એકવાર મળે એ એમના હેતને કારણે એમના થઈને રહેતા. ‘સાંદિપની’માં પણ પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજનું પદાર્પણ થયું હતું. દેશ-વિદેશની કથાઓમાં જ્યારે જ્યારે પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજનું આગમન થતું ત્યારે તેમની પ્રેમપૂર્ણ ઉપસ્થિતિ શ્રોતાઓને અને સાધકોને એક જુદી જ અનુભૂતિ કરાવતી. મારા પ્રત્યેનો એમનો સ્નેહ, એમનું હેત હંમેશાં યાદ રહેશે. પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સેવામય-તપોમય-સંયમપૂર્ણ સંન્યાસને અમે સૌ વંદન કરીએ છીએ. એમના જવાથી સનાતની ધર્મસંસ્કૃતિને એક બહુ મોટી ખોટ પડી છે. એની સાથે સાથે એમના જીવનથી એક બહુ મોટો સંદેશ અને પ્રેરણા પણ સાંપડી છે. (દ્વિવટ, સંબોધન)

પૂજ્ય શ્રી વૈષ્ણવાચાર્ય ગોસ્વામી ૧૦૮ દ્વારકેશલાલજી

(અમદાવાદ)

બી.એ.પી.એસ.ના નામે વિશ્વમાં હિંદુ ધર્મની ધર્મ ધજા ફરકાવનાર વિભૂતિ ને એવા દિવ્ય પ્રતિભા સંપન્ન પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના અવતારકાળમાં આપણે સમકાલીન રહ્યા છીએ. હિંદુ સનાતન ધર્મની સમસ્ત પરંપરાઓ અને આદર્શોને વિશ્વમાં ચોમેર તેમણે ફેલાવી છે. દરેકના હૃદયમાં બાપા પ્રત્યેના પોતપોતાના અનુભવ છે, અલગ અલગ ભાવો છે. એ બધા જ ભાવોનો સમન્વય કરીએ તો એ દિવ્ય પ્રતિભાનું સમ્યક્ દર્શન થાય. સન ૨૦૦૦ના વર્ષમાં યુનોમાં યોજાયેલ વર્લ્ડ સ્પિરિટ્યુઅલ સમિટ વખતે ન્યૂયોર્કમાં પૂજ્ય સ્વામીજીએ હિંદુ ધર્મગુરુઓના, સનાતની ધર્મની બધી જ પરંપરાના વિચાર-વ્યવહાર અને અભિવ્યક્તિ એક હોવાં જોઈએ એવી ભાવના વ્યક્ત કરી હતી. સમન્વયની એ ભાવના જેમના હૃદયમાં સામ્રાજ્ય કરીને બિરાજતી હતી એવા પૂજ્ય બાપાના સેન્સ ઓફ ઇગોલેસનેસ, સેન્સ ઓફ સેલ્ફલેસનેસ એટલે કે અહંશૂન્યતા અને નિઃસ્વાર્થતા આ બંને ભાવો તટસ્થ રીતે બંને કિનારાઓની જેમ પ્રમુખસ્વામી મહારાજના હૃદયે બિરાજ્યા હતા. તેમણે કહ્યું, ‘જો નિરંતર ભગવાનમાં નિષ્ઠા રાખી, શ્રદ્ધા રાખી અહંકાર અને સ્વાર્થ રહિતપણે અવિરત કર્મ થતાં રહે તો ભગવાનની કૃપાનો અનુભવ થાય છે. પ્રમુખસ્વામીના જીવનમાંથી તેનું દર્શન સમગ્ર વિશ્વને થયું છે. તેમનાં ચરણોમાં ભાવોર્મિઓ સમર્પિત કરીને સમગ્ર વૈષ્ણવ સંપ્રદાયની વલ્લભી પરંપરા વતી પૂજ્ય બાપાને અનેક અંજલિ અર્પણ કરી રહ્યો છું.’(સંબોધન)

પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી શ્રીવત્સ ગોસ્વામીજી

(દર્મચાર્ય, વૃંદાવન)

ઈતિહાસના એ કાલખંડનું સ્મરણ થાય છે, જ્યારે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ સાક્ષાત્ દિવ્યલાભ આપતા હતા. પરંતુ તેમણે દિવ્યલીલા કરી છે. ભારતીય સંસ્કૃતિની વૈશ્વિક ચેતનામાં એક અપૂર્વ તત્ત્વ છે - અક્ષરબ્રહ્મ, જેને આપણે ગુરુ સ્વરૂપે ઓળખીએ છીએ. પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એવા અક્ષરબ્રહ્મ ગુરુ હતા, જે નિશ્ચિત રૂપે પરબ્રહ્મ ભગવાન સ્વામિનારાયણનું સ્વરૂપ હતા. જીવમાત્ર પર કૃપા-કરુણાનું મૂર્તિમંત સ્વરૂપ પ્રમુખસ્વામી મહારાજ હતા. તેમની અંતિમ લીલાનાં દર્શને હું સારંગપુરમાં જઈ શક્યો નહીં, પરંતુ મન ત્યાં જ હતું. પરંતુ મેં પ્રમાણભૂત રીતે સાંભળ્યું છે પ્રમુખસ્વામીજીના ક્ષર દેહમાં પણ એટલું જ ચૈતન્ય હતું, એટલી જ સુકોમળતા અને દિવ્યતા હતી, જે બધું ૧૩ તારીખ પૂર્વે હતું. અહીં ક્ષર અને અક્ષરનો ભેદ નહોતો. એ ભેદ સમજવા માટે પ્રમુખસ્વામીજી જોઈએ.

હું વિશ્વભરમાં પરિભ્રમણ કરું છું અને જોઉં છું કે ભારતીયતાનો પર્યાય સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય બન્યો છે. તેનું કારણ પ્રમુખસ્વામી મહારાજ છે. આ વિશાળ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના પ્રમુખ સેવક કોણ? પ્રમુખસ્વામી મહારાજ. એમના હૃદયમાં મેં માત્ર એ પ્રમુખ સેવકનો જ ભાવ નીરખ્યો છે.

પ્રમુખસ્વામી કોણ થઈ શકે? ચૈતન્ય મહાપ્રભુના શબ્દોમાં કહું તો એ જ થઈ શકે, જે પોતાનું અસ્તિત્વ મિટાવીને તૃણથી પણ વધુ વિનમ્ર હોય, વૃક્ષથી પણ વધુ સહનશીલ હોય. એવા મહાપુરુષનું ગુણકીર્તન આપણે સદા સદા કરતા રહીશું, કારણ કે તેઓ સદાય આપણી વચ્ચે જ છે ને વચ્ચે જ રહેશે.(સંબોધન)

પૂજ્ય શ્રી સ્વામી તેજોમયાનંદજી

(પ્રમુખ, ચિન્મય મિશન, ભારત)

પરમ આદરણીય શ્રી પ્રમુખસ્વામી મહારાજને ચિન્મય મિશનમાં અમે સૌ હૃદયપૂર્વક શ્રદ્ધાંજલિ અર્પણ કરીએ છીએ. તેઓની આ મહાસમાધિથી સમગ્ર આધ્યાત્મિક વિશ્વે એક પરમ જ્ઞાની મહાપુરુષ ગુમાવ્યા છે. તેઓના જ્ઞાનનો પ્રકાશ અધ્યાત્મની ખોજ કરનારાઓને રાહ ચીંધશે અને તેમની યાદ હંમેશ માટે પ્રેરણાસ્ત્રોત રહેશે.(દ્વિવટ)

પૂજ્ય શ્રી ગૌરીદાસજી

(અધ્યક્ષ, ઇસ્કોન ભક્તિવેદાંત ટ્રસ્ટ, યુ.કે.)

શ્રીપાદ્ પ્રમુખસ્વામીજી અક્ષરનિવાસી થયાથી વિશ્વને એક મહાન સંત અને કરુણામૂર્તિની ખોટ પડી છે. પ્રેરણામૂર્તિ

સ્વામીશ્રી તેમના ગુરુદેવના મિશનને એક નવી ઊંચાઈએ લઈ ગયા, છતાં સદાય એક વિનમ્ર વ્યક્તિ તરીકે જીવ્યા. તેઓ અત્યંત સાદગીપૂર્ણ રીતે ગરીબોની વચ્ચે જઈને, કોઈપણ જાતના ભેદભાવ વિના, પોતાની પહોંચ હેઠળના દરેક સ્રોતનો માનવજાતની સેવા માટે ઉપયોગ કરતા હતા. મારા પિતા શ્રી પ્રમુખ- સ્વામીજીને મળ્યા બાદ ગર્વભેર કહેતા હતા કે, ‘હું હિંદુ ધર્મના પોપને મળ્યો.’ તેમના આશીર્વાદથી મારી પુત્રીનો અભ્યાસ સફળતાથી પૂર્ણ થયો. ઇસ્કોનનું વધુ સારું સંચાલન કેવી રીતે કરી શકાય તે અંગે તેમના દ્વારા મને ઘણું શીખવા મળ્યું છે. તેમની વિદાયથી ક્યારેય ન પુરાય તેવી ખોટ પડી છે.(પત્ર)

જગદ્ગુરુ શ્રી વિષ્ણુકાન્ત ગોસ્વામીજી (નિમ્બાર્કાચાર્ય પીઠ, પ્રયાગ)

શ્રી સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના જગવિખ્યાત પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજના બ્રહ્મલીન થવાના સમાચારથી અમે વ્યથિત થઈ ગયા.

પ્રમુખસ્વામીજી પોતાના જીવનના સર્વે મહત્ત્વપૂર્ણ સંકલ્પો સંપન્ન કરીને જે ભગવદ્વીય કાર્યો કર્યા છે તે શાશ્વત કાળ સુધી સૌ માટે પ્રેરણાસ્ત્રોત બની રહેશે. તેમને હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ અર્પું છું.(પત્ર)

પૂજ્ય શ્રી સદાશિવનાથ પલાની સ્વામી (હિંદુ મોનેસ્ટરી, હવાઈ ટાપુ)

હિંદુ ધર્મના એક મહાનતમ જ્યોતિર્ધરની મહાસમાધિના સમાચારે અગમ્ય રીતે વિહ્વળ બનાવી અમને અવાચક કરી દીધા છે. આ ક્ષણે અમને ગહેરી સહૃદયી લાગણી છે, કારણ કે આપણા માટે આ પળ જાણે સૂરજે પ્રકાશવાનું બંધ કરી દીધું હોય, જાણે આકાશગંગાનું ભ્રમણ સ્થગિત થઈ ગયું હોય અને જાણે અણુઓ પણ મૂક સ્મરણમાં થીજી ગયા હોય તેના જેવી બની રહી છે! નવેમ્બર, ૨૦૦૧માં જ્યારે અમારા પ્યારા ગુરુદેવ તેમની જ્યોતિમય દુનિયામાં સિધાવ્યા ત્યારે આવું અનુભવ્યું હતું.

અમારા દૂરવર્તી ટાપુ પરથી અમે આપ સૌ તરફ પહોંચી રહ્યા છીએ તે એટલા માટે નહીં કે પ્રમુખસ્વામી અમારા ‘હિંદુ ઓફ ધ યર’ હતા; ન તો એટલા માટે કે સમગ્ર વિશ્વના ખૂણે-ખૂણેથી જ્યારે પ્રેમ સંવેદનભર્યા શક્તિશાળી સંદેશાઓનું પૂર સારંગપુર તરફ વહી રહ્યું હશે તેમાં તમને અમારા એક નાનકડા અવાજની ખોટ સાલશે. અમે આપ સુધી વ્યક્ત થયા છીએ, કારણ કે અમે ગુરુહરિ પ્રમુખસ્વામીજીમાં દુર્લભ આધ્યાત્મિકતાનાં દર્શન કર્યા હતાં. અમે આપની સાથે છીએ, કારણ કે આપનો તેમના માટેનો અદમ્ય ભક્તિભાવ, આપની કઠિન સાધના, આપની સંઘનિષ્ઠા અને પ્રમુખસ્વામીજી આપનામાં જે સાકાર થયેલું જોતા હતા તે બનવાની આપની અનન્ય નિષ્ઠા અમને પ્રેરણા આપે છે. અમે આપના સુધી પહોંચ્યા કેમ કે ગુરુહરિનાં ચરણસ્પર્શ કરી લેવાની એક ઝંખના છે.(પત્ર)

શ્રી શ્રી શિવકુમાર સ્વામીગલુ (સિદ્ધગંગા મઠ, કર્ણાટક)

ભારતીય સંસ્કૃતિ અને પરંપરાઓને ઉજાગર કરનારી અજોડ સંસ્થાના જતન અને સંવર્ધનના કાર્યમાં સ્વામીજીએ રેડેલો પુરુષાર્થ ચિરઃસ્મરણીય રહેશે. પ્રભાવશાળી પ્રસ્તુતિઓ દ્વારા જનમાનસને જગાડવામાં તેઓ જીવનભર રત રહ્યા.(પત્ર)

પૂજ્ય શ્રી જી. એસ. ધિલ્લોન (પ્રમુખ, રાધાસ્વામી સત્સંગ, બિયાસ)

આ વિશ્વમાંથી સ્વામીજીની વસમી વિદાયથી આધ્યાત્મિક વિશ્વને મોટું નુકસાન થયું છે. સ્વામીજી મહારાજનો સાદગી અને સમાનતાનો સંદેશ આપણા સૌ માટે પથદર્શક બની રહેશે.(દ્વિવટ)

પૂજ્ય સ્વામી શ્રી રામદાસજી
(સંતરામ મંદિર, નડિયાદ)

ભારતીય પરંપરાના શ્રેષ્ઠ સંતોની હરોળમાં પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજનું નામ સદા યાદ રહેશે. વિશ્વમાં સૌથી વધુ મંદિરો, સંસ્કૃતિ કેન્દ્રો સ્થાપી એમણે સંસ્કૃતિ-ધર્મનું પ્રશસ્ય કાર્ય કરી, સહુને વાત્સલ્ય, બંધુત્વનો અનુભવ કરાવ્યો. થાક્યા વિના તેઓ જીવનભર ચાલ્યા છે, સદા પ્રેમની ગંગા વહાવતા રહ્યા છે. તેમને હૃદયથી ભાવાંજલિ. (દ્વિવટ, પત્ર)

પૂજ્ય મહંત શ્રી દેવીપ્રસાદજી મહારાજ
(આણદાબાવા આશ્રમ, જામનગર)

પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ શ્રેષ્ઠ અને આટલા પ્રસિદ્ધ મહાપુરુષ હોવા છતાં ખૂબ સરળ હતા. એમની સરળતા અને સહૃદયતા પ્રત્યે એક સાદો શબ્દ વાપરું તો એ છે, સાચા સાધુ. સાધુ થવું સહેલું છે, પણ સાચા સાધુ થઈને સાધુતા ટકાવી રાખવી બહુ અઘરી છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજે એ દુર્લભ અને આદર્શ સાધુતાનું દર્શન જીવનભર સૌને કરાવ્યું હતું. સૌને નમીને આદર કરતા, સૌને નિઃસ્વાર્થ પ્રેમ કરતા, સૌ પ્રત્યે સમદૃષ્ટિ રાખતા, એવા મહાન સંત શ્રી પ્રમુખસ્વામી મહારાજની ખોટની પૂર્તિ થવાની નથી. પરંતુ આવા વિરલ સંત ભૂતકાળ નથી બનતા. તે તો હંમેશાં વર્તમાનકાળ હોય છે. દીવાથી દીવો પ્રજ્વલિત થાય તો એના જેવો જ દીવો થઈ જાય. પ્રમુખસ્વામી મહારાજે પ્રગટાવેલો દીપ વિશેષ પ્રબળ બનશે એવો મારો પૂર્ણ વિશ્વાસ છે. (સંબોધન)

પૂજ્ય સ્વામી શ્રી નિર્મલાનંદનાથજી
(પ્રમુખ, આદિ યુનયુનગિરિ મઠ, કર્ણાટક)

આદિ યુનયુનગિરિ મઠના હજારો ભક્તો વતી હું ખાસ બ્રહ્મલીન પ્રમુખસ્વામી મહારાજનાં અંતિમ દર્શન કરવા આવ્યો છું. પૂર્વે ઘણી વખત તેમનાં દર્શન કર્યાં છે. તેમની આંતરિક સમજણ અને આધ્યાત્મિક તથા વ્યાવહારિક શાણપણે અમને ખૂબ જ પ્રભાવિત કર્યાં છે. તેમનાં અંતિમ દર્શન કરતી વેળાએ પણ મેં અનુભવ્યું કે, તેમના મુખારવિંદમાંથી દિવ્ય તેજ છલકાઈ રહ્યું છે. એ દર્શનથી મને અકથ્ય આનંદ અનુભવાયો છે. મને તેમનાં અંતિમ દર્શન કરવાની તક મળી તે જ મારા માટે ધન્ય ઘડી છે. અમારી તેમને હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ. (સંબોધન)

પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી મહાશ્રમણજી
(તેરાપંથ જૈનાચાર્ય, અણુવ્રત સમિતિ)

અક્ષરપુરુષોત્તમ સ્વામિનારાયણ સંસ્થાના વડા, કરુણાના સાગર, યુગાતીત, અનેક ગુણોથી સંપન્ન પ્રમુખસ્વામી મહારાજના અક્ષરવાસથી અમને ઊંડો આઘાત લાગ્યો છે. આચાર્ય શ્રી તુલસી, આચાર્ય શ્રી મહાપ્રજ્ઞજી, આચાર્ય મહાશ્રમણજી તથા અનુગામી મુનિ રાકેશકુમારજી સાથે તેમનો ગહન આધ્યાત્મિક સંબંધ રહ્યો છે. મુનિજી પ્રમુખસ્વામીજીની સર્વધર્મ સદ્ભાવનાથી વિશેષ પ્રભાવિત છે. માનવતા માટે જીવનનું બલિદાન આપનાર સ્વામીજીને અણુવ્રત પરિવારની અંજલિ. (પત્ર)

પૂજ્ય શ્રી વલ્કુબાપુ
(મહંતશ્રી, ચલાલા ગાદી)

પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એટલે સમગ્ર સંત સમાજ માટે ધ્રુવના તારા જેવા હતા. મકરંદ દવેએ એક ખૂબ સરસ પંક્તિ કહેલી કે ‘આવ્યો છું આમ ખાસ રખડવાને, વેરી ગયો ગુલાલ, તમે જ્યારે જોશો, ત્યારે કહેશો કે કરી ગયા કમાલ.’

પ્રમુખસ્વામી મહારાજ નિત્ય અવતાર જેવા હતા. આપણે વિચરણ કરતા હોઈએ ત્યારે આપણી સાથે ચાલે, આપણે પડી ભાંગ્યા હોઈએ ત્યારે માતાની જેમ આપણા ખભા ઉપર હાથ મૂકી, આપણા વાંઠામાં હાથ થાબડી આપણને આશ્વાસન આપે. લોકોનાં ઝૂંપડાંઓ સુધી પહોંચીને લોકોને જે શાતા આપી છે, એમની આંખમાંથી નીતરતો જે પ્રેમ સૌએ જોયો છે, તે ક્યારેય ભૂલી શકાય તેમ નથી. યુવાધનને સાચા રસ્તે ચડાવવા માટે, સંસ્કારયુક્ત બનાવવા માટે,

બાપાએ જે અથાગ પ્રયત્ન કર્યો છે, કોઈએ એટલો પ્રયત્ન કર્યો નથી. યોગીબાપા કહેતા કે ‘આ પ્રમુખસ્વામી દુનિયામાં જોરદાર ડંકો દેશે.’ આજે એમણે દુનિયાની અંદર ડંકો દીધો છે. ‘રામાયણ’ની અંદર રામની ઉપમા આપતાં કહે છે કે, રામ જેવા રામ જ છે. એમ પ્રમુખસ્વામી જેવા તો એ પ્રમુખસ્વામી જ હતા.(સંબોધન)

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી રાકેશભાઈ

(શ્રીમદ રાજચંદ્ર મિશન, ધરમપુર)

લાખો લોકોના આદરણીય ગુરુહરિ તથા જન્મજાત સંત પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના અક્ષરધામ-ગમનના સમાચારથી ગહન શોક અને આઘાતની લાગણી અનુભવાય છે. તેઓશ્રીના દેહાવસાનથી કોઈ એક સંપ્રદાય, જ્ઞાતિ કે પ્રદેશને જ ખોટ ગઈ નથી, પરંતુ સમસ્ત માનવજાતને, સમગ્ર વિશ્વને એક વિરલ યુગસર્જકનો, એક મહાન આધ્યાત્મિક વિભૂતિનો ચિર વિયોગ સાંપડ્યો છે.

વિરહની વસમી વેળાએ સ્મૃતિપટ પર ઝળહળે છે – તેઓશ્રીની અપરંપાર અસાધારણ ગુણસમૃદ્ધિ. ભગવાન સ્વામિનારાયણ પ્રત્યેની એકતાર ભક્તિ તેમજ પૂજ્ય શ્રી શાસ્ત્રીજી મહારાજ તથા પૂજ્ય શ્રી યોગીજી મહારાજ પ્રત્યેની અખૂટ આજ્ઞાભક્તિ અને શુદ્ધ સમર્પણ- ભાવનાના બળે તેઓશ્રીનું હૃદય અહંભાવથી શૂન્ય અને પરાભક્તિથી છલકાતું હતું. નિષ્કારણ કરુણા, નિઃસ્પૃહ સ્નેહ, અતુલ્ય સમદષ્ટિની નિરંતર ગંગા સમા પ્રમુખસ્વામી મહારાજે તેમનાં જીવનકર્તવ્યોથી કરોડો લોકોનાં જીવનમાં ભક્તિ, શાંતિ અને સેવા આદિ સદ્ગુણોની અકાટ્ય રોપણી કરી છે. બાળકોથી વૃદ્ધો પર્યંત સૌની વહાલપભરી કાળજી લેનાર, યુવાશક્તિને સર્જનાત્મક દિશામાં દોરનાર, સ્વદેશમાં તથા વિશ્વના અનેકાનેક દેશોમાં ભારતીય સંસ્કૃતિની શાન વધારનાર પ્રમુખસ્વામી મહારાજે પોતાનું સમગ્ર જીવન ધર્મપ્રભાવના અને લોકહિત અર્થે ન્યોછાવર કર્યું છે, ચંદનની જેમ ઘસાઈને અન્યને શીતળ અને સુવાસિત કર્યા છે. સાવ સાદા પણ હૃદયસ્પર્શી શબ્દોમાં તેઓશ્રીએ ભગવદ્ભક્તિ અને સદ્ગુણવૃદ્ધિનો, માનવકલ્યાણ અને સમાજોત્થાનનો પોતાનો જીવનસંદેશ વહેવડાવ્યો છે. સાદગીપૂર્ણ, સરળ અને સહજ વ્યક્તિત્વ છતાં અસ્તિત્વમાં અધ્યાત્મની સાગર સમી અગાધતા અને જીવનમાં ધર્માચરણની મેરુ સમી ઉન્નતતા હતી. તેમના અદ્ભુતાદ્ભુત ગુણોનું ચિંતન પણ આપણને માનવમંગળના, ગુણોત્પત્તિના એક વધુ ઉચ્ચતર સ્તરે લઈ જાય છે.

પ્રશાંત અને પ્રગલ્ભ આધ્યાત્મિકતાના સબળ પ્રતીક અને પ્રચંડ પ્રેરકશક્તિના પ્રકૃષ્ટ સ્વામી એવા પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજનું વિરલ ગુણ-ઐશ્વર્ય આ અવસરે પુનઃ પુનઃ સ્મરણમાં આવે છે. તેઓશ્રીનાં દર્શન-સમાગમનો પ્રભુકૃપાથી જ્યારે પણ સુયોગ સાંપડ્યો છે, આ માર્દવમૂર્તિએ હરહંમેશ મારા ઉપર અત્યંત સ્નેહ, સન્માન, વાત્સલ્ય, સહયોગ અને માધુર્યપૂર્ણ કૃપાદષ્ટિનો ધોધ વરસાવ્યો છે. આવા અલૌકિક ગુણાનિધાનને શ્રીમદ રાજચંદ્ર મિશન ધરમપુરના સમસ્ત મુમુક્ષુઓ સહિત ભાવપૂર્ણ સાદર શ્રદ્ધાંજલિ પાઠવું છું.(પત્ર)

પૂજ્ય શ્રી શંભુપ્રસાદજી મહારાજ

(સાંસદ, મહંત સયેયાનાથ ધામ, ઝાંઝરકા)

પરમ પૂજ્ય પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પૂજ્યપાદ પ્રમુખસ્વામી મહારાજ આપણી વચ્ચે સદેહે નથી, એની વેદના થાય છે. છેલ્લા કેટલાક કાલખંડથી ભારતવર્ષની અંદર સામાજિક વિષમતાને કારણે ઊભી થયેલી સ્થિતિની અંદર ઘેઘૂર વડલા જેવું નામ એટલે પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ, એવો છાંયડો. એમણે અનેક મંદિરો તો સ્થાપ્યાં છે, પણ એ મંદિરોની અંદર, આ હિંદુ સમાજની અંદર છેવાડાની પંક્તિમાં રહેલા, અંતિમ માનવને પણ પ્રવેશ આપ્યો છે. માત્ર મંદિરમાં પ્રવેશ આપ્યો છે એવું નથી, એને પોતાના દિલની અંદર, હૃદયની અંદર પ્રવેશ આપ્યો છે. મેં તો નજરે નિહાળ્યું છે. અનેક એવા પ્રસંગોએ પૂજ્ય સ્વામીજીએ દલિતોને, વનવાસીઓને પોતાના બાહુમાં લઈને પોતાના નાના દીકરાની જેમ ગળે લગાડ્યા છે અને વાત્સલ્ય આપ્યું છે.

આ મેં નજરે જોયું છે. સંપ્રદાયના તમામ સાધુ-સંતોએ બ્રહ્મસંબંધી દીક્ષા લીધેલા સંતો સાથે ઝાંઝરકા પધરામણી કરી. એ વખતના અમારા ઝાંઝરકાના મહંત પૂજ્યપાદ બળદેવદાસજી મહારાજ અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ એ બંને

વિરલ વિભૂતિઓએ સમાજને એકરસ બનાવવાનો સંદેશ ૩૦ વર્ષ પહેલાં આપ્યો હતો. એના કારણે સમાજમાં નવી ચેતના આવી હતી. સૌથી મહત્વની વાત તો એ કે, વંચિત સમાજ કે સમાજના છેવાડે બેઠેલા માણસને પણ પ્રમુખસ્વામી મહારાજે દીક્ષા આપી છે. આ સમાજમાંથી શિક્ષા અને દીક્ષા લીધેલા લોકોને પૂજ્ય સ્વામીજી દ્વારા સંચાલિત મંદિરોમાં રસોડાનું કામ કરતા જોયા છે. કોઈ આવીને જુએ તો ખબર પડે કે અહીં કેટલી આત્મીયતા છે! અહીં કેટલો ભાવ અને કેટલો પ્રેમ છે! અને એટલે જ મને પીડા થાય છે કે આજ આ વિરલ વ્યક્તિ આપણી વચ્ચે સદેહે નથી.

પ્રમુખસ્વામી બાપાએ જાંઝરકાની અંદર એમનાં ચરણ મૂક્યાં, દલિતોને પોતાના હૈયામાં નિવાસ આપ્યો, એટલે અમે એવું માનીએ છીએ કે સાક્ષાત્ હરિ જાંઝરકામાં આવ્યા, એ જાંઝરકાના ટુકડાને પવિત્ર કર્યો, ને ભારતવર્ષના દલિત સમાજને પૂજ્ય બાપાએ ગૌરવાન્વિત કર્યો.

ભારતવર્ષની અંદર અનેકાનેક આચાર્ય પરંપરાઓ છે, એની વચ્ચે મયૂરપિચ્છ સમાન જો કોઈ એક છોગું હોય તો એ આપણા પૂજ્ય સ્વામીબાપા હતા. દિવ્ય વિભૂતિ, વિરલ વ્યક્તિત્વ. આપણી વચ્ચેથી વિદાય થયા છે ત્યારે એમણે આપેલો સમરસતાનો સંદેશ, સમાજમાં દૂર બેઠેલા બંધુઓને પોતાના બનાવવાનો સંદેશ લઈ અને એમણે ચીંધેલા રાહ પર સૌ ચાલીએ.(સંબોધન)

પૂજ્ય શ્રી રામદયાલજી મહારાજ (અધ્યક્ષ, રામસ્નેહી સંપ્રદાય, રાજસ્થાન)

પૌરાણિક સંસ્કૃતિના પ્રાણપુરુષ, અધ્યાત્મ વિભૂતિ, બ્રહ્મપુરુષ પૂજ્યપાદ પ્રમુખસ્વામી મહારાજના અક્ષરધામ-ગમનથી ભારત અને વિશ્વની ધરતી અસહ્ય દર્દથી કણસી ઊઠી. શાંત અને દાન્ત મહાપુરુષના અક્ષરધામગમનથી ભારતના તમામ સંત-સમુદાયમાં એક અપૂરણીય ક્ષતિ અને અંતહીન વ્યથાનો અનુભવ થાય છે. પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ તો દિવ્યપુરુષ હતા. રામસનેહી સંપ્રદાય સાથે તેમનો સંબંધ અતૂટ હતો. સંપૂર્ણ રાષ્ટ્ર અને વિશ્વ સ્વામીજીની મંગલ વાણી અને સત્પ્રેરણાથી અગ્રેસર રહે એ જ અભ્યર્થના.(પત્ર)

પૂજ્ય શ્રી સ્વામી નિર્લિપ્તાનંદજી (ભારત સેવાશ્રમ સંઘ)

પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજે સ્વામિનારાયણ સંસ્થાની શ્રેષ્ઠતામાં વધારો કરવા અને સનાતન ધર્મની મહાનતા પ્રગટ કરવા માટે અગણિત આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિઓ કરી છે. આજે આપણે જોઈ રહ્યા છીએ તેમ તેમણે બંધાવેલાં મંદિરોએ હિંદુ ધર્મના પુનરુત્થાનમાં અગત્યનો ભાગ ભજવ્યો છે. તેઓ એક મહાન સ્વપ્નદ્રષ્ટા હતા. તેમણે પોતાનાં મંદિરોમાં ઉચ્ચ કક્ષાની પ્રભાવશાળી કલા-કારીગરીનો સમન્વય કરાવ્યો હતો, જેથી તેની મુલાકાત લેનાર દરેક વ્યક્તિ મહાન હિંદુ વારસાને વધુ સારી રીતે સમજી શકે અને તેની સરાહના કરે. તેમણે એક ઉત્તમ ઉદાહરણ પૂરું પાડ્યું છે, જેનું અનુસરણ કરીને અન્ય લોકો જ્ઞાન અને સમજણનું સાચું સંવર્ધન કરી શકે છે.(પત્ર)

શ્રી શહેરઝાદે હિરજી, (પ્રમુખ, પ્રિન્સ આગાખાન શિયા ઇસ્માઇલી કાઉન્સિલ, કેનેડા)

પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના ધામગમન વેળાએ અમારી અંતઃકરણપૂર્વક દિલગીરી અને ઊંડાણપૂર્વક સહાનુભૂતિ વ્યક્ત કરું છું.(દ્વિવટ)

પૂજ્ય સદ્ગુરુ શ્રી ઉદયસિંઘજી (ગુરુ, નામધારી શીખ પરંપરા, યુ.કે.)

અમારા પ્રિય પૂજ્ય શ્રી પ્રમુખસ્વામીજી મહારાજના ધામગમન પ્રસંગે અમે દુઃખ વ્યક્ત કરીએ છીએ અને ભગવાનને પ્રાર્થના કરીએ છીએ. આ દુઃખની ઘડીમાં અમે આપ સૌની સાથે છીએ.(દ્વિવટ)

બિશપ શ્રી ડૉ. જોસે

(ખ્રિસ્તી ધર્મગુરુ, ગુજરાત)

પ્રમુખસ્વામી મહારાજના અક્ષરનિવાસના સમાચાર સાંભળીને સૌરાષ્ટ્ર અને કચ્છના લાખો હરિભક્તો અને સત્સંગીઓ ઘેરા શોકની લાગણીમાં ડૂબી ગયા હતા. તેઓ તેમને ભગવાન-તુલ્ય માનતા હતા. અમે તેની અનુભૂતિ કરી શકીએ છીએ, કારણ કે તેઓ હંમેશાં વિશ્વશાંતિની પ્રાર્થના કરતા રહેતા હતા અને તેના માટે સતત પ્રયત્નશીલ રહેતા હતા.

તેમનાં પ્રવચનોમાં હંમેશાં લોકોને સુખી કરવાનો સાર જ નીકળતો. તેઓ ધાર્મિક પુરુષ હતા, છતાં માનવતાના પૂજારી હતા. લોકોની સેવા કઈ રીતે કરી શકાય તેનું તે શ્રેષ્ઠ ઉદાહરણ હતા. માનવસેવા અને પ્રભુસેવા એ તેમનો જીવનમંત્ર હતો. ધાર્મિક અને સામાજિક રીતે તેમણે લાખો લોકોની સેવા કરી છે.

સમાજ કલ્યાણનાં સેંકડો અને હજારો કામ કર્યા હોવા છતાં તેમણે મહાન હોવાનો ક્યારેય દેખાવ નથી કર્યો. તેઓ ભગવાન સમક્ષ પણ નમ્ર હતા અને લોકો સમક્ષ પણ એટલા જ નમ્ર હતા. તેમની અસીમ સાદગી અને આટલી મોટી સંસ્થાના કર્તાહર્તા હોવા છતાં નિષ્કિંચન રહ્યા, તેમની આ જ મહાનતા તેમનો સૌથી મોટો સદ્ગુણ છે. વિનમ્રતાની મૂર્તિ, સાંસારિક બાબતોથી તદ્દન વિમુખ.

તેઓ અન્ય ધર્મને પણ એટલો જ આદર આપતા હતા. તેઓ હંમેશાં કહેતા કે બીજા ધર્મને પણ સન્માન આપવું જોઈએ. તેઓ ખરેખર ભગવાનના માણસ હતા. માનવજાત માટે તેમણે જીવન સમર્પી દીધું અને માનવજાતને પરમાત્માનો માર્ગ ચીંધો.(સંબોધન)